॥ चारणत्व ॥

पुनर्जागरण का शंखनाद

वर्ष 1-अंक : द्वितीय | अक्टूबर-दिसम्बर 2018 | कुल पृष्ठ -44

"संघे शक्तिः कलियुगे"

CGF

सामाजिक संगठनों के समन्वय से समृद्ध एवं सशक्त होगा समाज

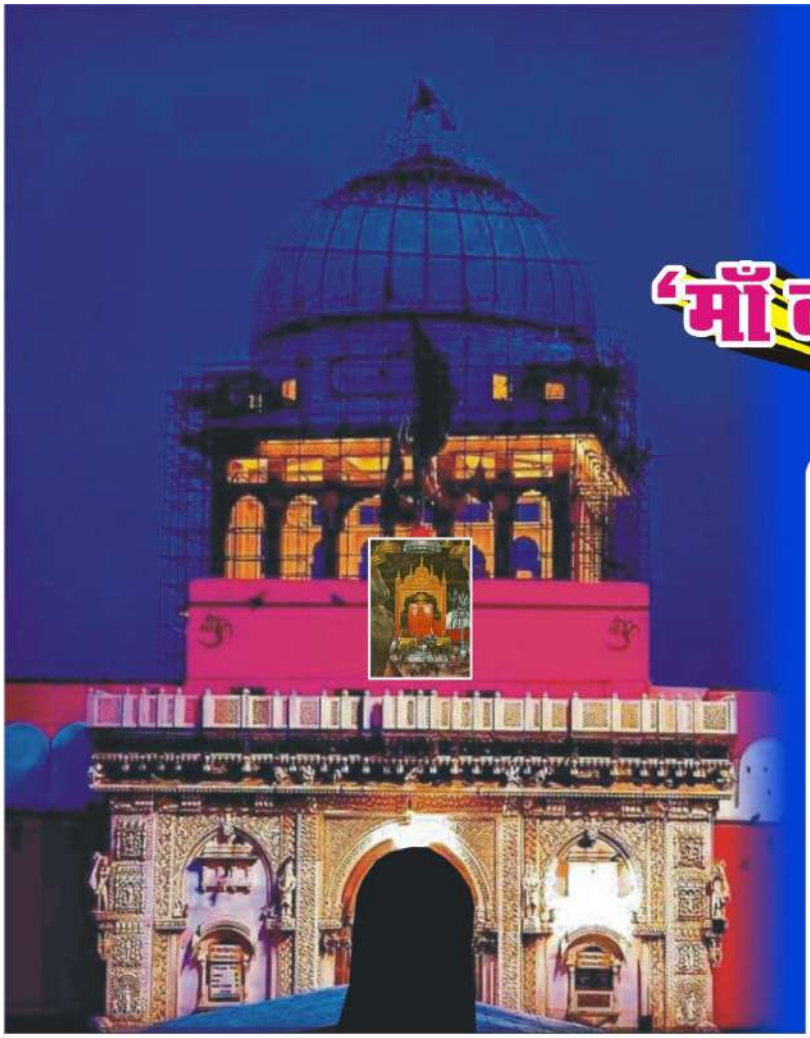

'माँ करणी विश्वरूपम'

शक्तिपीठों में सर्वाधिक चमत्कार एवं ऐतिहासिक जानकारियां मां करणी जी की उपलब्ध है। 'माँ करणी विश्वरूपम' के माध्यम से समस्त भक्तों के समक्ष भगवती करणी जी का वैश्विक दर्शन सबके सन्मुख लाने का प्रयास किया जा रहा है। 'माँ करणी विश्वरूपम' पुस्तक में भारतवर्ष के समस्त शक्तिपीठों में राजस्थान के इस शक्तिपीठ की अनगिनत ज्ञात–अज्ञात गाथाएं , चमत्कार, भक्तों के अनुभव एवं माँ करणी के 500 से अधिक मंदिरों का परिचय का इसमें समावेश होगा। इसी के दूसरे भाग में होगा माँ करणी से पूर्व एवं पश्चात की समस्त ज्ञात अज्ञात देवियों की विस्तृत जानकारी जिन्होंने समय–समय पर चारण कुल में अवतार लेकर लोकमंगल कार्य किए । समस्त ऐश्वर्या की अधिष्ठात्री शक्ति जब अपने भक्तों में श्रद्धालुओं को संरक्षण प्रदान करने स्वेच्छा से मानव आकृति में अवतरित होकर लीला करे तो यही एकमात्र चमत्कार है । मातेश्वरी की प्रत्येक लीला अद्भुत चमत्कारपूर्ण होती है। जन्म से लेकर परम ज्योति की अवधि तक श्री करणी जी ने दीन दुखियों को अपने अमोघ कृपा प्रसाद से निहाल किया व आज भी अनवरत सब पर कृपा बरसा रही है।

मातेश्वरी करणी जी के समस्त मंदिरों का सचित्र संकलन एवं मां करणी का वैश्विक रूप दर्शन के क्रम में यह स्मारिका प्रकाशित की जा रही है जिसमें समाज की रचनाएं, मां करणी जी पर शोध करने वाले, मां करणी जी पर साहित्य सृजन करने वाले सभी विद्वानों के अनुभव व भाव रचनाएं प्रकाशित की जाएगी।

आप सभी से निवेदन है कि आपके गांव, क्षैत्र में स्थापित मां करणी जी एवं अन्य किसी भी चारण देवी के स्थान कि विस्तृत जानकारी एवं फोटो हमें प्रेषित करें।

आध्यशक्ति के प्रमुख स्वरूपों में पश्चिम की अधिष्ठात्री भगवती हिंगलाज का पश्चिम एवं मध्य भारत में विशेष महत्व और स्थान है । राजस्थान में अवतरित भगवती करणी जी आदिशक्ति हिंगलाज का अवतार थी। जगत जननी जगदंबे का सबसे प्रसिद्ध अवतार लोकपूज्य देवी करणी जी का रहा है। लोक मंगल की सेवा से ओतप्रोत, नर से नारायण की स्थिति के साथ बेशुमार भक्तों की आस्था का केंद्र रही माँ करणी ने तत्कालीन समय में बड़े–बड़े राज्यों की स्थापना करवाकर सर्वत्र शांति स्थापित करते हुए समाज के सभी वर्गों में समन्वय स्थापित किया। पीड़ित मानवता की सेवा के लिए दिए गए संदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक है । राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करणी जी महाराज की लीलाओं का गुणगान होता है, ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी में भी माताजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्त्व पर शोध प्रकाशित किये हैं । पूराणोत्तर युग के पूजनीय ईश्वरीय शक्ति के ऐसे पूर्ण एवं आंशिक अवतारों में देशाणराय करणी जी का विशेष स्थान, वैष्णो देवी, कामाख्या देवी, ज्वाला देवी सहित कई शक्तिपीठों से भी अधिक लोकप्रिय हैं। उन सब

॥ चारणत्व ॥

पुनर्जागरण का शंखनाद

Cgif बदलेगा चारण गढवी समाज की दिशा व दशा

लौट आया चिरजाओं का दौर

श्री नारायण सिंह गाडण 'जन्म शताब्दी समारोह'

मेवाड़ में शिक्षा का गौरवशाली इतिहास

- चारण मैथिलीशरण 'अक्षय सिंहरतनू' 06
- श्री करणी माता की शिक्षाएं एवं संदेश 08
- नवरात्रि महोत्सव एवं ओरण परिक्रमा 10
- गौरवशाली गाँव 'नोख' 12
- चारण छात्रावास जालोर 19
- शक्तियों की अवतार स्थली मीठन 21
- रेत के धोरो से रेवन्दतदान का सूरज को न्योता 23
- क्रा.वी. केसरी सिंह बारहठ 146 वीं जयंती 25
- चारणत्व मैगजीन विमोचन 28
- राजस्थानी सुरों की पर्याय, अनुप्रिया लखावत 30
- अमावस की रात का दीपक (चारण अस्तित्व सेवा संस्थान) 31
- वायु सेना कार्मिकों का स्नेहामेलन 34
- समाज में बदलाव की सुखद बयार 37
- पाठकपीठ 38
- काव्य कलरव 40
- चारणत्व समाचार 42

संपादक :
महेन्द्र सिंह चारण

कार्यालय :
करणी इन्फोसिस
57, कोलीवाड़ा, DCM शो रूम के पीछे
उदयपुर-313001 (राज.) 9983921903, 7425916103

॥ चारणत्व ॥
पुनर्जागरण का शंखनाद

/charanatva
/charanatva
+91-9983921903
www.charanatva.com
contact@charanatva.com
+91-7425916103

संपादक की कलम से....

'चारणत्व की बात'

सम्मानित बंधुजन! चारणत्व मैगजीन, को समाज उपयोगी ,ज्ञानवर्धक ,संस्कार, शिक्षा, भविष्य निर्माण में सहायक, समाज के जरूरतमंद के लिए सहयोगी, धार्मिक अध्यात्मिक सांस्कृतिक विकास में सहभागी बनाने के लिए आप सभी समाज जनों का पूर्ण सहयोग एवं भागीदारी अपेक्षित है। किसी भी समाज के साहित्य का प्रकाशन समग्र समाज के विकास, संस्कार, शिक्षा क्षेत्र, सामाजिक कुरीतियां मिटाने, परस्पर संवाद के जरिए सामाजिक संगठन को मजबूती प्रदान करने, आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए किया जाता है । मेरा यह प्रबल विश्वास है कि समाज के विकास का मतलब आर्थिक संपन्न वर्ग संगठित होकर जरूरतमंद वर्ग के लिए शैक्षिक, आर्थिक, व्यावसायिक सहयोग कर उन्हें समाज की मुख्यधारा में जोड़ने का प्रयास करने में है अतः समाज के विकास में उक्त विषय पर हमें कार्य करना है।

हमें प्रत्येक गांव में प्रबुद्ध जनों के मार्गदर्शन में युवा कार्यकर्ताओं को आगे लाकर समाज के विकास में भागीदार बनाना है।

समाज में एक केरियर गाइडेंस समूह बनाया जाए जो पूर्व में चिन्हित युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान कर उनकी क्षमता अनुसार सही पाठ्यक्रम रोजगार एवं व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए मार्गदर्शन एवं सहयोग करें।

हमें विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत समाज के बंधुओं का सहयोग करना चाहिए जिनमें शिक्षा, चिकित्सा, कंप्यूटर, आईटी, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल, केरियर काउंसलिंग, वस्त्र किराना, सेल्स एवं सर्विस, होटल एवं विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्र में कार्यरत है, उनसे सेवा का लाभ लेकर सभी बंधु उन्हें सहयोग करें जिससे सामाजिक संगठन मजबूत आर्थिक रूप से सुदृढ़ होगा।

प्रतिभाओं का केवल सम्मान करना ही पर्याप्त नहीं है अन्य सभी को भी प्रतिभाशाली बनाने की दिशा में प्रयत्न करने होंगे।

हमारे में यह खूबी है कि हम मात्र सलाह राय विश्लेषण करने के आदी हैं, इसमें माहिर हैं हमें इन से ऊपर उठकर समाज में विकास, सुधार एवं सहयोग के लिये भागीदार बनना है। केवल दूर बैठकर कमी निकालने की प्रवृत्ति के बजाय हम साथ होकर अपनी भूमिका निर्वहन करें तो निश्चित रूप से आने वाले समय में अच्छे परिणाम सामने होंगे एवं समाज का आर्थिक, सामाजिक स्तर सुधरेगा।

वर्तमान में समाज की दशा को समझने के लिए एक उदाहरण आपके समूह प्रस्तुत है 'जिस प्रकार से शरीर के अंग पर यदि कोई घाँव हो जाता है और इसके इसके ऊपर लेप करने से ऊपरी सतह तो ठीक लगती है मगर अंदर ही अंदर घाँव जस का तस रहता है ठीक ऐसी ही स्थिति सामाजिक ढांचे में देखने को मिल रही है। वर्तमान में समाज सेवकों की कहीं कमी नहीं है हर कोई बढ़ चढ़कर कार्य करना चाहता है, हर क्षेत्र में संस्थाएं संगठन बन रहे हैं, सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, इतना सब कुछ होते हुए भी स्थिति उस घाँव की तरह है जिस की ऊपरी सतह पर सब अच्छा प्रतीत होता है मगर अंदर वहीं सड़ांध भरी स्थिति ।

स्वजनों ! हमें सोचना होगा कि स्थाई ठोस एवं परिणाम जनक परिवर्तन क्यों नहीं हो रहा है? हमें विचार करना होगा क्यों नहीं? हम एक सशक्त ढांचा या ऐसा स्थाई मंच बना पाए जो सार्वजनिक रूप से हर समस्या का हल करने के लिए स्थाई रूप से सक्षम हो। किसी को बीमारी में, दुर्घटना में, अभाव में, सोशल मीडिया पर मुहिम चलानी पड़ती है, सहयोग के लिए मगर वह कितनी टिकाऊ व कारगर साबित होती है, यह निश्चित नहीं, क्योंकि आपसी तालमेल समन्वय की कमी है। सैकड़ों की संख्या में छोटे छोटे क्षेत्रीय संगठन ,संस्थाएं ,परस्पर संवाद समन्वय की नितांत कमी, ना आर्थिक आधार, न सशक्त संगठनात्मक रूप से परिपक्वता फिर भी कार्य हो रहा है यह अच्छी बात है।

श्रेष्ठ एवं स्थाई कार्य करना है तो हमें आपस में मिलकर अपने अपने क्षेत्र के वरिष्ठ विशेषज्ञों को साथ में लेकर कार्य करना होगा सबको समन्वित होकर, एक होकर साथ में कार्य करते हुए समाज के सर्वांगीण विकास हेतु अपना सर्वस्व देना है ।

महेन्द्र सिंह चारण

चारण गढ़वी इंटरनेशनल फाउण्डेशन

Cgif बदलेगा चारण गढवी समाज की दिशा व दशा

अहमदाबाद / जोधपुर।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ पूरा विश्व एक मुट्ठी में समा रहा है, कई वर्ग ,समुदाय ,जाति ,धर्म संगठित होकर स्वयं को सशक्त कर रहे हैं । समय के साथ प्रगति करने एवं स्वयं का गौरवशाली अस्तित्व बनाए रखना हमारे समाज के लिए भी चुनौतीपूर्ण है। ऐसे समय में चारण गढवी इंटरनेशनल फाउंडेशन समाज के लिए अत्यंत आशाजनक मंच के रूप में उदय हुआ है, जिसका उद्देश्य समाज का चहुँमुखी विकास करते हुए प्रत्येक चारण के गांव, घर को जोड़कर संगठित करना है। सीजीआईएफ के लोगो में जो 'आई' (I) है उसका विश्लेषण करते हुए राजा भाई बताते हैं कि आई जो एक वृक्ष बन कर सब को छाया में एक कर रहा है वह हमारी परंपरा की पहचान है दूसरा हमारे में अहम के भाव को विलोपित कर के " में" से "हम" का भाव जागृत करता है इसकी 8 शाखाएं जो चारण गढवी के मूल गुण है सत्य ज्ञान ज्ञान समर्पण कर्तव्य पवित्रता प्रेम भक्ति इन को आत्मसात करते हुए एक दूसरे से जुड़े हैं ।

Cgif हमारे समाज का एकमात्र ऐसा संगठन है जो कंपनी अधिनियम 2013 / 7 के तहत 9 अप्रैल 2015 को ट्रस्ट के रूप में कंपनी के अंतर्गत पंजीकृत है जिसके पंजीयन क्रमांक .....! सीजीआईएफ का उद्देश्य एकता कल्याण सांस्कृतिक आदान–प्रदान आर्थिक गतिविधियों, शैक्षणिक सहायता और चारण समाज की प्रगति के लिए काम करना है । सीजीआईएफ का कार्य क्षेत्र भारत में विदेशों के परिभाषित जिलों में होगा। 21 वर्ष की उम्र की महिला पुरुष cgif के सदस्य हो सकते हैं और समाज के लिए कार्य कर सकते हैं ।

एकता कल्याण और प्रगति के लिए विचारों को जोड़ने के लिए एक वैश्विक मिशन है Cgif । यही मिशन का प्रमुख वक्तव्य है। चारण गढवी इंटरनेशनल फाउंडेशन वैश्विक संगठन है जो परस्पर कनेक्टिविटी का मंच प्रदान करता है व्यक्तिगत संबंधों को सामूहिक संस्थाओं से जोड़ता है। जिससे चारण गढवी समुदाय की एकता (चारण एक धारण) कल्याण (मांगल्यम) और प्रगति (विकास सिद्धम) के लिए सामूहिक प्रयास (संविवृद्धः प्रयाण) किया जाता है।

चारण महान विरासत गौरवशाली मूल्यों को अपने में समेटे हुए भारत के 9 राज्यों और अन्य देशों में फैले हुए हैं और एकता के लिए कनेक्टिविटी के साझा मंच के रूप में cgif जिन्हें संगठित करेगा। साथ ही आज के समय में सभी चारणों को उनके विरासत मूल्यों से जोड़ना समय की आवश्यकता है । समाज में कई क्षेत्रीय रीति–रिवाजों और कई उप संप्रदाय हैं इसलिए युवा लोग उलझन में है कि उन्हें चारणों के किन मूल्यों का पालन करना है इसके लिए समग्र प्रगति की दिशा में उचित दृष्टिकोण की आवश्यकता है cgif सुव्यवस्थित संचित और लोकतांत्रिक संगठन के रूप में स्थापित करने के लिए चारण समाज को सक्षम बनाने के लिए कार्य करने को प्रतिबद्ध है। इसके लिए कई क्षेत्रों में कार्य करना प्रारंभ कर दिया है 'व्यवस्थित संरक्षण के माध्यम से दुनिया में सभी चारणो का डाटा बेस बनाना ।

- सभी क्षेत्रिय संस्थाओं के संगठनों के मध्य संबंध स्थापित करना ।
- चारणों के इतिहास पर अनुसंधान योजनाओं को प्रारंभ करना।
- चारणों के युवाओं युवतियों के लिए वैवाहिक सेवाएं शुरू करना।
- प्रतिभा खोज कार्यक्रम के माध्यम से जरूरतमंद छात्रों के लिए शिक्षण सहायता छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- चारणी साहित्य को प्रकाशित करना और संरक्षण करने के लिए सतत प्रयास करना।
- चारण समाज के गांवों में चिकित्सा स्वास्थ्य सहायता केंद्र स्थापित करना।
- हिंगलाज मल्टी स्किल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट स्थापित करना ।
- व्यापारियों के बीच सामाजिक आर्थिक नेटवर्क स्थापित करना।
- हरिद्वार में सेवा सदन को बढ़ावा देना।

•करणी माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूट स्थापित करना।
•नौकरी के अवसर पैदा करने के लिए प्रयास करना।

Cgif नेटवर्क के माध्यम से विभिन्न तरह की सामाजिक कल्याण के लिए निम्न पांच गतिविधियों को प्रमुख रूप से तय किया गया।

1. विरासत कला संस्कृति और साहित्य
2. दो युवा और सांस्कृतिक कला युवा कल्याण
3. महिला रोजगार विशेष श्रेणी महिला कल्याण
4. cgif प्रशासन शिक्षा सामाजिक एकता कार्य और कैरियर विकास के लिए
5. सोसायटी इकोनामिक आर्थिक गतिविधियां (प्रगति) ।

उपरोक्त सभी डिवीजनों को हेड ऑफ डिपार्टमेंट द्वारा नियंत्रित किया जाएगा कोर्पोरेट स्तर पर प्रत्येक विभाग का नेतृत्व अध्यक्ष या उपाध्यक्ष(vp) करेंगे, जिला स्तर जिला अध्यक्ष, क्षेत्रीय प्रबंधक केंद्र (RM) स्तर पर विभाग प्रबंधक या टीम लीडर (DM) सुप्रीम काउंसिल इसका अध्यक्ष ग्रुप चेयरमैन cgif के कार्यकारी अध्यक्ष करते हैं.जिनका कार्य निवेश बजट परियोजना अनुमोदन नीति बनाना और वैश्विक संचार के मामले में प्राधिकरण के रूप में कार्य करना है। सुप्रीम काउंसिल न्यायपालिका दीर्घकालिक रणनीति योजनाओं में सदस्यों के चयन और दूरदर्शी मामलों में गवर्निंग काउंसिल/ कार्यकारी अधिकारी को सलाहकार भूमिका प्रदान करेगा ।

एसपीसी में अधिकतम 23 सदस्य होंगे जिसमें 5/6 महिलाएं होगी। एसपीसी में 18 सदस्यों को नियुक्त किया जाएगा व 9 नामित किए जाएंगे। जो चारण गढवी समुदाय के बीच में उपयोगिता के आधार पर नामांकित होंगे। शिक्षा क्षेत्र, प्रशासनिक क्षेत्र ,और सामाजिक और उद्योगिक व्यापार क्षेत्र के सदस्य सुप्रीम काउंसिल के सदस्य हो सकते हैं । Cgif की सभी गतिविधियों के निष्पादन पर समग्र नियंत्रण होगा अध्यक्ष कार्यकारी अध्यक्ष और एमडी का ।

जीओसी पर सर्वोच्च अधिकार होगा उन्हें सभी कार्यात्मक प्रमुखों, जोनल हेड, वित्त और विपणन प्रमुख और शिव जीआईएफ के महासचिव मुख्य सचिव द्वारा समर्थित किया जाएगा। जीओसी निष्पादन नेटवर्किंग प्रक्रियात्मक अनुवर्ती और लंबी अवधि और अल्पकालिक योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार है इस परिषद में एसपी द्वारा दिए गए दिशा–निर्देशों के भीतर क्षेत्रीय बजट को मंजूरी देने का अधिकार होगा इस परिषद के अधिकतम सदस्य 18 होंगे लेकिन प्रबंधन की जरूरत के अनुसार यह भिन्न हो सकता है।

जिलापरिषद :–

Cgif जिले प्रत्येक क्षेत्र में चारणो की आबादी के अनुसार सर्वोच्च परिषद द्वारा परिभाषित क्षेत्र है जिला अध्यक्ष और जिला के बीपी की अध्यक्षता में प्रत्येक जिले की अपनी कार्यसमिति होगी। यह समितियां cgif की प्रक्रियाओं और नीति को लागू करने के लिए काम करेगी, ताकि cgif प्रत्येक जिले में चारणो के जमीनी स्तर तक पहुंच सके। इस समिति को जिला सचिव जिला अध्यक्ष युवा कला और साहित्य मंच जिला अधिकारी केंद्र प्रमुख जिले के 3 नेताओं द्वारा नामितत किया जाएगा। इसमें अधिकतम 11 सदस्य होंगे प्रत्येक जिले में चारणों की आबादी के अनुसार एक से अधिकतम 5 केंद्र होंगे। केंद्रीय समिति का संचालन केंद्र संचालन निदेशक द्वारा किया जाएगा। सभी कार्यों के के लिए टीम लीडर होंगे केंद्र समिति के पास अधिकतम 11 सदस्य होंगे ।

Cgif के द्वारा चारण समाज के लिए काम वितरण पर समग्र नियंत्रण करने के लिए चारण समुदाय के इलाकों को विभिन्न जिलों में वितरण किया गया है इस स्तर पर कुल 34 जिलों की पहचान हुई है ।

गुजरात– काठियावाड़ जलावद सौराष्ट्र गोहिलवाड़ हेलार बराडी केंद्रीय गुजरात जिला खेड़ा आनंद जिला उत्तर गुजरात जिला मेहसाणा जिला पंचमहल जिला दक्षिण गुजरात और कच्छ जिला।

राजस्थान– जोधपुर जिला पाली जिला सिरोही जिला बाड़मेर जिला बीकानेर जिला शेखावाटी मेवाड़ दक्षिण मेवाड़ वागड़ जयपुर अजमेर जिला।

शेष भारत– महाराष्ट्र मुंबई पुणे मध्य प्रदेश निमाड़ सेंधवा इंदौर दक्षिण भारत चेन्नई बेंगलुरु एनसीआर जिला दिल्ली हरियाणा ।

शेष विश्व– खाड़ी देशों में दुबई संयुक्त अरब अमीरात अफ्रीका

केनिया यूरोप ब्रिटेन लंदन ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड पाकिस्तान अमेरिका।

बोर्ड के द्वारा समय–समय पर अनुमोदन द्वारा किसी भी जिले का विलोपन का निर्णय या जोड़ने का निर्णय किया जा सकेगा।

'संसाधन और सदस्यता नियम' सीजीआईएफ के द्वारा अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए सदस्यों से अपनी निश्चित आय के साथ–साथ अन्य संसाधनों से परिवर्तनीय आय भी करेगी।

सदस्यता की विभिन्न श्रेणियों के लिए उच्च आदेश से शुल्क तय करेगा। Cgif, जरूरतों के अनुसार शुल्क समय–समय पर अलग मद में हो सकता है।

सदस्य– cgif की सदस्यता चारण समुदाय तक ही सीमित होगी कोई भी पुरुष महिला कम से कम 21 साल की उम्र पर दुनिया के किसी भी हिस्से से वेबसाइट के माध्यम से पंजीकरण कर के सदस्य बन सकता है ।

रॉयल सदस्य पुरुष 50,000 रुपए, महिला ₹21000 जीवन काल तक यह (केवल 200 सदस्य ही रह सकेंगे) (संरक्षक) सदस्यता पुरुषों के लिए 11000 महिलाओं के लिए ₹5000 15 वर्ष के लिए।

1 cgif के सदस्यों से निश्चित आय । 2. दान और सहायता और धन उगाहने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से परिवर्तनीय आय। 3. निवेश से कमाई उत्पादों फ्रेंचाइजी की बिक्री इत्यादि 4. विशिष्ट उद्देश्यों के लिए संस्थागत योगदान।

सभी आय को विभिन्न प्रयोजनों कंपनी के उद्देश्य के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। विभिन्न श्रेणियों में निधि के उपयोग के लिए नीति बनाई गई है।

फंड उपयोगिता नीति एवं बजट निर्धारण के लिए मापदंड–

cgif का उद्देश्य चारण गढवी समाज के क्षेत्रों में विकास के लिए अपने संघ का उपयोग करना है जिलों के माध्यम से आए

श्री करणी मन्दिर चारण छात्रावास जोधपुर

यह मन्दिर पूर्व में मुरारीदान जी किनीया पुत्र मोतीलाल सा (संस्थापक चारण छात्रावास जोधपुर) ठी.पोपावास के अथक प्रयासों से वर्ष 1972 में बनाया गया था । उस समय चारणों के परिवार जोधपुर में बहुतायत बसने से यहाँ दर्शनार्थी बढ़ने से मन्दिर छोटा पड़ने लग गया।

चारण समाज के 24 सम्मानित भामाशाहो के सहयोग से इसका पुनरोद्धार कराया गया ।यह कार्य भी किनीया परिवार पोपावास के अथक सामूहिक प्रयास से श्री गोपाल सिह जी किनिया एवं नारायण सिह जी किनीया द्वारा कराया गया ।

गए कुल फंड का 75% उसे जिले में उपयोग किया जाएगा और 20% को क्षेत्रीय खाते में स्थानांतरित कर दिया जाएगा 5% सीजीआईएफ के कॉर्पोरेट खाते में रखा जाएगा

विभिन्न गतिविधियों के लिए बजट आवंटन करने के लिए नियम 30% शिक्षा और कैरियर के विकास के लिए 25% सीजीआई आफ द्वारा संचालित सामाजिक विरासत और साहित्य गतिविधियों के लिए 20% युवाओं द्वारा कला खेल सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए 10% पत्रिका प्रशासनिक व्यय को चलाने के लिए बजट 15% महिला सशक्तिकरण ।

CGIF के प्रयासों से माण्डवी, इण्डिया हाऊस में लगे क्रांतिकारियों के चित्र

चारण मैथिलीशरण–अक्षय सिंह रतनू

चारण समाज में एक से बढ़कर एक देदिप्यमान नक्षत्र की भाँति कवि हुए हैं। पिछली शताब्दि की बात करें तो श्री अक्षय सिंह रतनू का नाम एक महत्वपूर्ण कालजयी रचनाकार के रूप में सामने आता है । जिन्हें राष्ट्रीय कवि मैथिलशरण के समकक्ष माना है। रतनू शाखा में नागौर जिले के जीलिया चारणवास गांव में इनका जन्म हुआ, इनके पिताजी का नाम जुझार सिंह जी था मां का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनका लालन–पालन अपने बुआ के यहां अलवर राजगढ़ में हुआ और वही प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त हुई। विघ्न बाधाओं के कारण इनका अंग्रेजी का अध्ययन अधूरा रह गया किंतु अलवर के प्रसिद्ध विद्वान श्री गिरधारी लाल जी भट्ट के सानिध्य में पूर्वार्जित हिंदी एवं संस्कृत ज्ञान का परिष्कार किया और भारतीय ग्रंथों का पारायण कर काव्य विषयक अच्छी व्युत्पत्ति प्राप्त कर ली। तत्कालीन अलवर नरेश श्री सवाई जय सिंह देव ने जब भारत में सर्वप्रथम हिंदी देवनागरी को राजभाषा घोषित किया तथा तत्शिक्षणार्थ कर्मचारी प्रशिक्षणालाय की स्थापना की तब इन्हें प्रधानाध्यापक नियुक्त किया। एक बार अर्थ संकट से तंग आकर इन्होंने अलवरेंद्र को एक दोहा लिख भेजा जिससे इनकी दुगनी पदोन्नति हो गई और यह उनके निजी प्रधान कार्यालय में बुला लिए गए। जब अलवर नरेश के देश प्रेम पूर्ण क्रियाकलापों से क्रुद्ध होकर अंग्रेज सरकार ने उन्हें निर्वासित कर दिया तब सर फ्रांसिस वायली नियुक्त हुआ और उसने इनसे गुप्त भेद लेना चाहा किंतु उन्होंने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया, इससे कुपित होकर एक मात्र इनको ही गलती में मान लिया। उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय सम्मेलन जोधपुर के खुले अधिवेशन में इन्होंने अपनी कविताबद्ध भाषा में तत्कालीन अंग्रेज शासकों की कड़े शब्दों में आलोचना की। इनके १२५ छंदों को सुनकर श्रोताओं ने सर्वसम्मति से चारण मैथिलीशरण की उपाधि से अलंकृत कर दिया ।इन्होंने कई मंत्रालयों में मुख्य रिडर, निजी सहायक तथा शाखा अधिकारी के रूप में राज्य सेवा की है। आपने अलवर राज्य के अत्यल्प संख्यक चारण समाज को संगठित करके श्री करणी चारण छात्रावास की स्थापना की है। राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण कर जयपुर में भी इन्होंने श्री करणी चारण छात्रालय का निर्माण कराया ।अक्षय कुटिर जयपुर में इनका अधिकांश समय अध्ययन एवं लेखन में व्यतीत हुआ। महाकवि श्री नरहरि दास अवतार सिंह की व्याख्या लिखने में भी परिश्रम किया ।अक्षय सिंह जी ने 14 वर्ष की अवस्था में कविता लिखना आरंभ कर दिया था। प्रारंभिक अवस्था में श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का अनुवाद किया किंतु न रूचने के कारण फाड़ डाला, इन्होंने अक्षय जय स्मृति, अक्षय किशोर स्मृति, अक्षय संदेश, अक्षय तेज नीति समुच्चय श्रीकरणी पूजा पद्धति

, तथा चित्तौड़ के तीन शाके की सृष्टि की है जो प्रकाशित है ,पत्र–पत्रिकाओं में राजस्थानी के साथ साथ हिंदी और बृज भाषा में फुटकर रचनाएं छपी है ।इन्होंने चीन एवं पाक के साथ संघर्ष में वीर योद्धाओं की जो प्रशस्तियां लिखी है वे बड़ी ही प्रेरणास्पद है ।कई रचनाएं आकाशवाणी जयपुर से प्रसारित होती रहती थी। राजस्थानी कविता के उदाहरण स्वरूप यहां कवि की रचना जयपुर री झमाल का उपसंहार दिया जाता है इसमें जयपुर की आज की आध्योपांत विशेषताओं का निरूपण है।

संकलन – श्री चंद्रसिंह गांगणिया

'ईयर बुक में बी.डी चारण का चयन'

निजी क्षेत्र में कठोर मेहनत एवं प्रतिस्पर्धा में उच्च परिणाम देकर अपनी काबिलियत के दम पर पहचान बनाने वालों में बी.डी. चारण एक उदाहरण बने है। कंपनी की ईयर बुक में बीडी चारण का फोटो एवं साक्षात्कार प्रकाशित हुआ है। कॉर्पोरेट ग्रुप बजाज एलियांज के मुखपत्र में पूरे भारत वर्ष में 16 से 18000 एंप्लोई में से 3 या 4 एम्पलाई को जगह मिलती है , जिसमें बी डी चारण का चयन होना प्रशंसनीय है।

झीणकली के बी.डी चारण अभी उदयपुर क्लस्टर हैड हैं। निजी क्षेत्र में कार्यरत युवाओं के लिए आग्रह है कि सरकारी जॉब बहुत कम है व इसमें बहुत समय देने की बजाय निजी क्षेत्र में अपनी मेहनत से और काबिलियत के दम पर भविष्य और अधिक उज्जवल बना सकते हैं

लौट आया चिरजाओं का दौर

आधुनिक युग में युवा तड़क–भड़क व सिनेमा की ओर अग्रसर हैं, लेकिन आजकल सोशल मीडिया पर एक सुखद एहसास देखने को मिल रहा है कि युवाओं का चिरजाओं की ओर रुझान बढ़ रहा है, फिर वह चाहे सोशल मीडिया का प्लेटफार्म हो या चिरजा रात्रि जागरण, आजकल सक्रियता बढ़ी है। व्हाट्सएप ग्रुप **''माताजी की चिरजाएं''** बने हुए हैं जिसमें अनुशासनात्मक रूप से केवल सिर्फ माताजी के गुणगान करने वाली, मन को भाव विभोर करने वाली चिरजाएँ पोस्ट होती है। यह पुरानी से लेकर नई , हर कलाकार की आवाज में सुनने को मिलती है। यह नई पिढी के युवाओं को भी रुचिकर लगती है। कई नए कवि, रचनाकार इस प्लेटफार्म से सीख कर शानदार रचनाएँ बनाकर प्रेषित कर रहे हैं। माताजी की चिरजाएं ग्रुप के एडमिन श्री देवराज सौदा राबचा, प्रहलाद कविया" प्रांजल" भवानीपुरा और धीरज अखावत छोटा उदयपुर द्वारा ग्रुप में चिरजाओं के लगातार प्रेषित करने से नई–नई रचनाएँ सुनने को मिल रही है। इनके द्वारा गैर व्यवसायिक यूट्यूब चैनल्स ***Mata Ji Chirja What*s App Group*** **तथा *Kavi Prahlad Singh Kavia*** भी बनाये गये है जिनमें कई गायक कलाकार श्री गोविंद दान जी देपावत, नारायण दान जी रत्नू, कल्याण सिंह पालावत, विशाल जी कविया, अनुप्रिया जी लखावत, महिपाल सिंह जी, शंकर दान जी सान्दू, नेहा अमरावत, शांतनु किशनावत, श्रीमती सुमन देपावत, सांवलदानजी देपावत देशनोक, भंवरदानजी देथा दुदाबेरी,ललिता सारस्वत जैसे सभी गायक कलाकारों की मधुर आवाज में भिन्न–भिन्न चिरजाएं यूट्यूब पर सुनने को मिल सकती है करीब तीन चार वर्षों से चल रहे इस व्हाट्सएप ग्रुप के बाद यह यूट्यूब चैनल भी काफी लोकप्रिय हो रहा है युवाओं में यह क्रेज चारण समाज के लिए सांस्कृतिक एवं देवी उपासना को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

उदयपुर में भी नियमित चवदस व रविवार को चिरजा गायन प्रोग्राम रखा जाने लगा है। इससे सामाजिक मेल मिलाप होने का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष लाभ भी मिलता है। उदयपुर में श्री करणी सेवा समिति के जयदेव सिंह झीबा द्वारा माछला मगरा करणी मंदिर में प्रत्येक रविवार को चिरजा गायन करके जोत की जाती है, जिसमें कई भक्तगण भाग लेते हैं। ठीक इसी प्रकार जयपुर में भी **''चारण युवा संघ''** द्वारा प्रत्येक चवदस को रात्रि जागरण रखना प्रारंभ हुआ है। चारण युवा संघ के श्री अभिनव सिंह कविया एवं दिलीप कविया ने बताया कि प्रत्येक चवदस को चिरजा रात्रि आयोजित की जाती है, जिसमें माताजी की चिरजाओं की प्रस्तुति दी जाती है। जयपुर महासभा की तरफ से इसके लिए हारमोनियम एवं स्पीकर की व्यवस्था की गई है इस प्रकार यह चलन प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से समाज में सकारात्मक देवीपुत्र संस्कृति व परंपरा को संरक्षण संवर्द्धन करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

हिंगलाज माता जी के स्थान पर चवदस को जागरण भी प्रारंभ किया है। दिलीप सिंह जी कविया के साथ उनकी टीम द्वारा टोंक जिले में स्थित हिंगलाज माता मंदिर पर अब चारण समाज द्वारा आयोजन किए जाने लगे हैं यह स्थान बहुत प्राचीन होते हुए भी यहां पर समाज के बंधुओं का बहुत समय पहले आना जाना कम था तथा पूजा व्यवस्था अन्य समाज के लोगों को सौंप दी गई थी। इस प्रकार यह जागरूकता सुखद संकेत है।

कई भक्तों द्वारा चिरजाओं का संकलन करके किताबें भी प्रकाशित करवाई हैं। पूर्व में जय सिंह जी सिंढायच द्वारा अंतस कि अरदास, डिंगल के प्रकांड विद्वान गिरधर दान रत्नू की करणी कीरत, उमेश देवल द्वारा श्री परमेश्वरी प्रशस्ति पुस्तक प्रकाशित करवाई गई, इसी प्रकार श्री नारायण सिंह जी महिया, प्रहलाद सिंह प्रांजल, रणजीत सिंह रणदेव की रचनाएं सोशल मीडिया पर बहुत पसंद की जा रही है।

– प्रहलाद सिंह प्रांजल
भवानीपुरा

श्री करणी माता की शिक्षाएं एवं संदेश

(मां के अवतरण दिवस की सभी भक्तों को बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाएँ)

भगवती श्री करणी माता ने इस मरूधरा के सुवाप गाँव (जोधपुर के आऊ के निकट) में वि.स. 1444 आश्विन शुक्ल सप्तमी शुक्रवार के दिन अवतार लिया । उन्होंने अपनी मां श्री देवल आढ़ी के गर्भ में 21मास रहकर मेहाजी किनिया(चारण) की छठी पुत्री के रूप में जन्म लिया। इस प्रकार मां करणीजी का प्राकट्य अद्वितीय व अद्भुत था जो कि मानवशास्त्र के नियमों के विपरीत था। माँ करणीजी के प्राकट्य की तरह ही उनके ज्योतिर्लीन होने का तरीका भी विशेष उल्लेखनीय है । वे वि.स. 1595 को चैत्र शुक्ल नवमी को गडियाळा व गिराछर के बीच धनेरी (खराढयां) तलाई के पास रूक कर उदित होते हुए सूर्य की तरफ मुंह करके ध्यानावस्थित हुए और अपने सेवक सारंग विश्नोई से अपने सिर पर जल की बूँदें डलवायी । इसी के साथ उन्होंने योग शास्त्र विधि से अपने शरीर से अग्नि (ज्योति) प्रज्ज्वलित करके अदृश्य हो गये।

मातेश्वरी श्री करणी ने जिस रास्ते पर चलने की शिक्षा दी,उन्होंने स्वयं उस पर चलकर अनुकरणीय जीवन की राह दिखलाई है ।

इस सम्बन्ध में विद्वान जयसिंहजी सिंढायच(मण्डा) का दोहा विशेष महत्त्वपूर्ण है ।

सूंधा ने मुंहगां कियां,पोती निज परणाय।
मारू काछैल रो मात (थे), दीनों भैद मिटाय।।

इस प्रकार करुणामयी श्री करणी माता ने जो व्यवहार प्रत्यक्ष व दृश्य संसार को बताया है उससे उनके भक्तों को शिक्षा लेने की आवश्यकता है । मां भगवती में हालात बदल देने की कितनी क्षमता थी कि उन्होंने इस संसार में अवतार लेकर धर्म को दृढ़ता प्रदान की । इसके अलावा उन्होंने दीन दुःखियों के दुःख को दूर करने के लिए बीकानेर व जोधपुर जैसे सुदृढ़ राज्यों की स्थापना बिना किसी खून खराबे से बड़ी लगन से की।

जब उनके पुत्र लाखन (उनकी बहिन गुलाब बाई की उदर से उत्पन्न पुत्र) की वि.स. 1524 कार्तिक शुक्ल चवदस के दिन कोलायत के तालाब में डूबने से मृत्यु हो गई तो गुलाब बाई के अनुरोध पर भगवती श्री करणी माता ने लाखन को चमत्कारपूर्ण पुनः जीवित कर दिया। मां करणी जी ने यमराज को अपना विराट स्वरूप दिखाकर जीव के मरणोपरांत यमपुरी (स्वर्ग नरक)जाने की मर्यादा को ही बदल डाली। मां करणी जी के वचनानुसार उनके वंशज की मृत्यु होने पर देशनोक मंदिर में काबा (चूहा) बनता है और मंदिर में काबे की मृत्यु होने पर उनके वंश में मनुष्य रूप में जन्म होता है। इन्हीं कारणों से श्री करणी मंदिर में काबों को श्रद्धालू चुग्गा, मिठाई व दूध इत्यादि खाद्य पदार्थ खिलाकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं । मां करणी के मंदिर में हजारों काबों के होने के बावजूद भी वहां कभी प्लेग न फैलना विश्वविख्यात चमत्कार के रूप में माना जाता है । यह चमत्कार सम्पूर्ण विश्व एवं वैज्ञानिकों को आश्चर्यचकित कर देने वाला है । मां करणीजी का यह चमत्कार विज्ञान को गलत साबित कर देता है और सोचने के लिए मजबूर कर देता है।

मां करणी जी के भक्त लक्ष्मी नारायण जी सोनी (डूंगरगढ़) के मतानुसार भगवती श्री करणी माता ने कार्तिक शुक्ल चवदस के दिन ही लाखन को मृत्योपरांत पुनः जीवित किया था । मां करणी जी के भक्तों की यह मान्यता है कि इस अद्भुत व अद्वितीय चमत्कार को देखने के लिए कार्तिक शुक्ल चवदस की रात को तैतीस कोटि देवी देवता मां करणी जी के धाम देशनोक के ओरण में उपस्थित हुए थे। मां करणी जी के इसी दिव्य अलौकिक चमत्कार पर पुष्प वर्षा की।

इसी की स्मृति में कार्तिक शुक्ल चवदस की रात को प्रति वर्ष मां करणी जी के ओरण की लाखों भक्तों द्वारा परिक्रमा दी जाती हैं। इस प्रकार भगवती श्री करणी माता ने अपने पुत्र लाखन को आज से करीब 626 वर्ष पूर्व पुनः जीवित किया था। करूणा की सागर श्री करणी माता तो वर्तमान समय में भी इसी तरह अपने भक्तों का उद्धार कर रही हैं लेकिन उसके लिए धौकलसिंहजी राठौड़ चरला जैसी भक्ति भावना की आवश्यकता है। मां करणी जी ने धौकलसिंहजी चरला के पुत्र दिलीप सिंह जी को 1970 ई में मृत्योपरांत पुनः जीवित कर दिया , 12 मई 2002 ई को भक्त अशोक जी चांडक (निवासी गंगा शहर, बीकानेर) की मृत जन्मी लड़की को पुनः जीवित कर दिया । इसी तरह से करीब 125–150 वर्ष पहले अपने भक्त सुवाप के जवाहरदान जी किनिया के पुत्र को मृत्योपरांत पुनः जीवित कर दिया था।

मां करणी जी ने भगवान श्री कृष्ण की तरह दो बार अपना विराट स्वरूप दिखलाया था एक बार लाखन को जीवनदान के समय धर्मराज को तो दूसरी बार खारोड़ा यात्रा के दौरान शक्ति स्वरूपा बूट माता को। इसी तरह करणी माता जी ने अपने जीवनकाल में तीन बार अपने दिव्य दैविक शक्ति स्वरूप में दर्शन दिये। पहली बार अपने जन्म के समय मां देवल आढ़ी को, दूसरी

बार पति देपाजी का भ्रम निवारण हेतु व तीसरी बार बन्ना भक्त को अपना दिव्य दैविक स्वरूप बताया जिससे उसने मां करणी जी के दिव्य स्वरूप की मूर्ति का निर्माण किया। जो देशनोक मंदिर में शोभायमान है ।भगवान श्रीकृष्ण की तरह से श्री करणी माता को गौपालन व गौ सेवा का कार्य बड़ा प्रिय लगता था । वे गौ रक्षार्थ ही राव कान्हा, कालू पेथड़ व सूजा मोहिल का वध करते हैं ।जब राव कान्हा गायों के प्रति संवेदना शून्य हो गया तो मां करणी जी ने उसे खूब समझाने का प्रयास किया। लेकिन उस हठी शासक राव कान्हा ने जगदम्बा से अपनी मौत ही मांग ली। भगवती श्री करणी माता ने गौ रक्षार्थ शहीद हुए दशरथ मेघवाल दशरथ मेघवाल को अपने निज मंदिर में पूजा का अधिकारी बनाकर ऐसा अद्भुत कार्य किया है जो तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था, रीति–रिवाजों को तोड़ते हुए भारतीय इतिहास में दुर्लभ ही दृष्टिगत होता है । इस प्रकार उन्होंने व्यक्ति की कर्म प्रधानता का संदेश दिया है ।

मां करणी जी के पास असीम त्याग व मातृभाव तथा शक्ति पुंज का वैभव था। उनके चरित्र में हमें दीन दुः खियों की निः स्वार्थ व स्नेह सेवा दिखाई पड़ती हैं । जब श्री करणी माता के आशीर्वाद से राव रिड़मल जांगलू व मंडोवर का शासक बन गया तो उसने अपने संकल्प के अनुसार माताजी को अपना आधा राज्य भेंट करना चाहा तो उन्होंने उसे मनाकर दिया । इस पर राव रिड़मल ने अधिक आग्रह करके दस गाँव मां करणी जी को भेंट करने चाहे तो भी उन्होंने मना कर दिया। उसके अत्यधिक आग्रह पर उन्होंने दस गाँवों की सीमाओं को मिलाकर उसका एक गांव बनाकर अपनी गायों के चारागाह के रूप में देशनोक गाँव बनाकर लेना स्वीकार किया । मां करणी जी की कर्मस्थली देशनोक में आज भी 10,000 बीघा का ओरण गायों व पशुओं के लिए छोड़ा हुआ हैं । जो करणी माता के त्याग व गौ सेवा का हमें संदेश दे रहा है अर्थात् उनके लिए सत्ता सुख भोगना महत्वपूर्ण नहीं था।

मां करणी जी अपने भक्त राव शेखा भाटी के उद्धार के लिए सवळी बन गये व अणदा खाती की जीवन रक्षा के लिए दुम्भी(दु मुहा सर्प) बन गये । भक्त झगडू शाह की तूफान से समुद्र में डूबती नाव को किनारे लगाने के लिए अपनी भूजा को चमत्कारिक ढंग से बढ़ाकर उसकी जीवनरक्षा करते हैं । मां करणी जी के समय के शासक मारवाड़ के राव चूड़ा, राव रिड़मल, राव जोधा, बीकानेर का राव बीका, कांधल, बीदा, राव लूणकरण, राव जैतसी, जैसलमेर के महारावल देवीदास, महारावल जैतसी व पूगल का शेखा भाटी व हरू भाटी मुख्य थे । ये सभी शासक मां करणी जी के अनन्य उपासक थे जो मां करणी जी के चमत्कारिक चरित्र से फलीभूत हुए । मां करणी जी की सर्वशक्तिमान शक्ति के कारण सुदूर मुलतान खानकाह के मुस्लिम पीर भी उनके प्रति श्रद्धा भाव रखते थे । मुलतान की इस पीर परम्परा द्वारा 1947 ई तक मां करणी जी के चढ़ाने के लिए खाजरू आते थे। जाट शासक पान्डू गोदारा मां करणी जी का अनन्य भक्त था । विश्नोई जाति का सारंग मां करणी जी का रथ चलाने वाला था। इस सारंग विश्नोई को ही भगवती श्री करणी माता के ज्योतिर्लीन होने का साक्षात् दर्शन करने का अवसर भगवती ने उसे प्रदान किया जिससे उनके पुत्र पुण्यराज भी वंचित हुए ।

ये सम्पूर्ण विश्नोई जाति के लिए आज के परिपेक्ष्य में गौरव की बात हैं । मां करणी जी के अतिप्रिय सेवक अणदा खाती, सूवा ब्राह्मण, भूरा भंसाली, झगडू शाह(जैन),अमरा चारण,चांदण खिड़िया, मेहा आढ़ा, दशरथ मेघवाल, बन्ना सुथार आदि थे ।जिन्हें मां करणी जी ने वात्सल्य दिया था और मां करणी जी के आशीर्वाद से पुष्पित व फल्लवित हुए । इस प्रकार मां करणी जी की दृष्टि में कोई राजा व रंक का कोई भेद नहीं था। मां करणी के जीवन चरित्र पर विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक श्री करणी माता का इतिहास व श्री करणी माता के चमत्कार एक बार जरूर पढ़ें । उक्त दोनों ही पुस्तकें प्रमाणिक सन्दर्भ के आधार ऐतिहासिक दृष्टि से लिखी गई है ।

इस भक्तों को मातेश्वरी श्री करणी जी के अवतरण दिवस की बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाएँ ।

लेखक
डॉ. नरेन्द्र सिंह आढा झांकर
इतिहास व्याख्याता रा.उ.मा.विद्यालय घरट, सिरोही

नवरात्रि महोत्सव एवं ओरण परिक्रमा देशनोक

इस वर्ष नवरात्रि महोत्सव देशनोक खुडद, वलदरा, मण्डपी सहित सभी शक्तिपीठों में धूमधाम से मनाया गया देशनोक में प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी नवरात्रि मेले में देपा जी राजस्थानी डिंगल कवि सम्मेलन प्रतिभा सम्मान समारोह एवं माता जी का जन्मोत्सव हजारों भक्तों के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। सप्तमी को माँ करणी का जन्म दिवस था इसके उपलक्ष में शोभयात्रा निकलती हैं जो कि सुबह 9.00 बजे श्री करणी माता मंदिर से श्री तेमड़ाराय मंदिर के लिए जाती हैं और इसी दिन दोपहर 3.00 बजे चारण समाज की प्रतिभावन छात्र–छात्रों सम्मान समारोह का आयोजन भी किया जाता हैं और रात्रि में भक्ति संध्या का आयोजन किया जाता हैं जिसमे गुजरात के प्रख्यात कलाकार भाग लेते हैं

अष्टमी 17 अक्टुबर 2018 रात्रि में देशनोक के लाडले कवि मनुज देपावत की स्मृति में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।देपोजी राजस्थानी डिंगल कवि सम्मेलन का शुभारंभ कवियों ने विभिन्न कविताएं प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। करणी स्टेडियम में श्री करणी मंदिर निजी प्रन्यास की ओर से आयोजित राजस्थानी एवं डिंगल कवि सम्मेलन का शुभारंभ करणी मंदिर निजी प्रन्यास के अध्यक्ष शेषकरणदान चारण, सचिव करणीदान चारण एडवोकेट के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम में कवियों के द्वारा प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को बांधे रखा अपने गीतों के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित कवि मुकुट मणिराज ने बेटी की विदाई पर कर्णप्रिय रचना कोई सुन तो जावे तो प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया । कवि गौरव चंदन ने भी समा बांधे रखा कार्यक्रम में कवि श्रेणीदान देपावत, कवयीत्री विजयलक्ष्मी देपावत, कवि मोहन सिंह, राजेंद्र सिंह सहित अनेक कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर श्रोताओं को देर रात तक बांधे रखा कवि सम्मेलन का कुशल संचालन डॉ. गजादान चारण ने किया।

देवेन्द्र देपावत
देशनोक

माँ करणी विश्वरूपम पोस्टर का विमोचन

माँ करणी जयंती पर शोभायात्रा

श्री हिंगलाज धाम मण्डफी में प्रतिवर्ष की भाँति सुआसनीयों का सम्मान किया गया

श्री प्रवीण रोहड़िया (बाशुण्डी) महानायक अमिताभ बच्चन को माँ करणी की तस्वीर भेंट करते हुए ।

करणी युवा मण्डल बीकानेर द्वारा नवरात्री समारोह का आयोजन किया

गौरवशाली गाँव 'नोख'

माताजी का मंड

मालण माता जी

नोख (KAVIYAN) चारणो के जागीरो मैं से एकमात्र ऐसी जागीर है जो एक बहुत बडे राजपूति संघर्ष के फलस्वरुप अस्तित्व मे आयी । नोख एक राजपूत और एक चारण कवि की घनिष्ठ मित्रता का परिणाम है ।

आज राजस्थान राज्य के पाली जिले मे राजपूतो की उदावत खाँप का प्रभुत्व है । ये उदावत खाँप महान वीर यशस्वी राव उदाजी के वँशज है । राव उदाजी जोधपुर के सँस्थापक महावीर जोधाजी के पौत्र थे ।

राव उदाजी और खेतसी जी कविया की बहुत अच्छी मित्रता थी ये मित्रता चँदरवरदाई और सम्राट पृथ्वीराज चौहान की तरह थी ।

राव उदाजी और खेतसीजी दोनो उस वक्त जवान थे । वे हर वक्त शिकार , गोठ और भ्रमण आदी मैं व्यस्त रहते थे।

एक बार राव उदाजी अपनी मौसी से मिलने के लिये जैतारण पधारे । साथ मैं खेतसी जी भी थे । जैतारण मैं उस वक्त राजपूतो की सिँदल खाँप का राज था । राव उदाजी की मौसी जैतारण के सिँदल खाँप के शासक को ब्याह रखी थी ।

राव उदाजी के पास लगभग 20–25 सवार साथ थे । जब राव उदाजी जैतारण पधार कर अपनी मौसी का चरण स्पर्श किया तो मौसी ने नजदीकी गाँव लौटोती आशीर्वादपूर्वक हाथखर्ची मैं दिया ।

राव उदाजी लोटौती पधारे और वहीं पर अपना खेमा लगाया । लोटौती के नजदीक मैं निम्बोल नामक गाँव था । निम्बोल नामक गाँव मैं रिद्दरावल जी नामक बहुत ही सिद्ध सँत का आश्रम था । राव उदाजी भी आश्रम मैं पधारे और रिद्धरावल जी महाराज के दर्शन किये । रिद्धरावल जी महाराज के ज्ञान से प्रभावित होकर राव उदाजी ने उनको गुरु मान लिया । एक दिन अचानक रिद्धरावल जी महाराज ने राव उदाजी से कहा " है उदा ये आने वाला समय तेरा है , सिँदल राजपूतो का पतन तो निश्चित है इसलिये बेहतर होगा की तु जैतारण के शासक तुम्हारे मौसाजी राव सिँदल को मार कर जैतारण पर राठौडो का पर राव उदा जी पहले तो अपनी मौसा पर हमला करने मैं हिचकिचाये परन्तु गुरु के बहुत समझाने के बाद वे जैतारण हथियाने की बात मान गये । अब राव उदाजी , खेतसी जी कविया और उनके सभी 20–25 साथी उचित मौके का इन्तजार करने लगे और वह मौका आ भी गया जैतारण के किसी कँवर की शादी के अवसर के रुप मैं ।

राव उदाजी ने कहा की बारात के प्रस्थान के पश्चात जैतारण के गढ मे बहुत कम सिँदल राजपूत बचेँगे और आसानी से कब्जा कर लेँगे क्युँकि सारे सिँदल राजपूत तो बारात मैं जाने वाले है ।

बारात के प्रस्थान का दिन भी आ गया । राव उदाजी को खबर थी की बारात सुबह प्रस्थान करेगी और हम दोपहर मैं हमला करेँगे । लेकिन विधि को कुछ ओर ही मँजूर था । किसी कारणवश बारात प्रस्थान मैं उस दिन देर हो गयी और सारे सिँदल राजपूत गढ मैं ही मौजूद थे और राव उदाजी ने खेतसी जी कविया के साथ मिल कर जैतारण पर धावा करने के लिए युद्ध की तुरही बजवा कर जैतारण गढ़ के सामने आ गए द्य तब सिँदल राजपूत 250 से 300 की सँख्या मैं जैतारण गढ़ में मौजूद थेँ ।

जब राव उदाजी , खेतसी जी "कविया" और उनके दो दर्जन साथीयो ने जैतारण गढ के किलेदार का सर काटा तो गढ़ के किलेदारो की चीख पुकार सुन कर गढ के अन्दर मौजूद सभी सिँदल राजपूत सावधान हो गये और भवानी का जयकारा लगाने लगे । उन 250–300 के जयकारो को सुनकर राव उदाजी को लगा की हम सब की मौत निश्चित है । राव उदा जी ने अपने इष्ट मित्र खेतसी जी को गले लगा कर कहा की "है मित्र मुझे आपकी वीरता और पहलवानी शरीर पर कोई सँदेह नही है परन्तु आप चारण हो और पूजनीय व अवध्य हो , आप को यहा से घोडे पर सवार होकर बिराई कवियान या जोधपुर चले जाना चाहिये ताकि आपके प्राण बच सके ।"

ये बात सुनकर कविराज खेतसी जी गदगद हो गये और भावुक होकर जवाब दिया.....

उदो–खेते खेते–उदो , ना चारण ना राव ।

कवित–रण रण कवित , उगे आथमे चाव ।।

अर्थात मैं चारण कवि होने से पहले आपका मित्र हुँ, आप एक.

अर्थात मैं चारण कवि होने से पहले आपका मित्र हुँ , आप एक राजपूत योद्दा से पहले मेरे बचपन के दोस्त है ।आपने मेरे कविता पाठ में बहुत साथ दिया आज मैं रण में आपका साथ दुँगा । यही मेरा निश्चय है ।

कलम–दुधारी वैरी–रगत दवात , लिखु जय कवित जैतारण धरा।

खेतसी जी कविया ने राव उदा से कहा की " आज तो मेरी दुधारी तलवार ही मेरी कलम लग रही है , उन सिँदल राजपूतो का रक्त स्याही प्रतीत होती है मैं आज दुधारी तलवार तथा वैरीयो के रक्त से जैतारण की धरा पर राठौडो की विजय गाथा लिखुँगा।

यह बात कहने के बाद उन मतवाले वीरों ने जैतारण के गढ मैं घुस कर सिँदल राजपूतो को काटना शुरु किया । राव उदाजी अपनी ढाल की मार से वहा के सिंदल योद्धाऔ की भीड़ को चीरते हुए अपने मौसाजी की तरफ बढने लगे तभी खेतसी जी कविया सिँदल राजपूतो पँक्ति को यमलोक पहुँचाते हुए किले की दीवार पर चढे और सिंदल राजपूतो का झण्डा उतार कर माँ करणी प्रतीक चील के निशान वाला राठौडी झण्डा जैतारण गढ पर बुलँद किया । ये बात देख कर सारे के सारे सिँदल राजपूतो ने खेतसी जी कविया को घेर लिया ।

खेतसी जी कविया इसी मौके की तलाश मैं थे । अब वो राजकवि अकेला सौ योद्धाओ से झूझने लगा और लडते–लडते गढ से बाहर आ गया व जैतारण के किले से दक्षिण की ओर बढने लगा।

जब वह वीर किले से आधे से ज्यादा सिँदल योद्धाओ को बाहर ले आया और लडते लडते दक्षिण की तरफ बढने लगा । तो राव उदाजी को उनके मौसाजी तक पहुँचने का रास्ता साफ हो गया । तभी किले के अन्दर मौजूद राव उदाजी ने अपने मौसा को मार कर वहाँ के राजसी पाट पर कब्जा कर लिया । ईधर कविया खेतसी जी ने अपने से लड रहे काफी यौद्धाओ को यमलोक पहुँचा दिया था । तभी एक सिंदल राजपूत वीर की तलवार चमकी और कविया खेतसी जी के धड से उनके सर को अलग कर दिया ।और बचे हुए सिँदल राजपूत निश्चित हो गये की अब तो ये बला टली । पर वहाँ पर सिँदल रा पर वहाँ पर सिँदल राजपूतो का पासा उल्टा पडता नजर आ रहा था । वह चारण वीर खेतसी कविया बिना सर के भी तलवार चला रहा था ।और इतिहास गवाह है की उस कवि ने बिना सर के पीछे बचे हुए सिँदल राजपूतो का सँहार किया लेकिन तलवार तब भी चल रही थी और वह धड आखिर मैं थक गया और जैतारण के गढ के दक्षिण मैं आकर गिरा ।वहा पर आज झुझँडा गाँव बसा हुआ है । वहीँ पर उन खेतसी जी का चबुतरा भी है जिनको बावरी–मेघवाल समाज के लोग झूँझार जी बावजी के रुप मैं पूजते है ।

खेतसी जी कविया की शहादत के समय उनका पुत्र निमा उर्फ निम्बसि जी बहुत छोटा था । जब खेतसी जी कविया का पुत्र निम्बसि बडा होकर जवान हुआ तो अपनी वीराँगना माँ की आज्ञा लेकर जैतारण आया लेकिन तब तक राव उदा जी का देहाँत हो चुका था तथा जैतारण पर राव उदाजी के पुत्र खीँवकरणसि का राज्य था । ये वहीँ खीँवकरण जी थे जो जैता व कूँपा के साथ गिरी–सुमेल के युद्ध मैं शहीद हुए थे । जब खीँवकरण जी को मालूम हुआ था की मेरे पिता राव उदा जी के परम मित्र कवि खेतसी का पुत्र निम्बसी आया है तो खीँवकरण जी खुद सामेळा करने आये और अपने ह्दय से लगाया ।

साथ ही निम्बसी कविया को दो गाँव ग्यासणी (नोख) व बासनी (कवियान) देकर सम्मानित किया ।

महान वीर कवि खेतसी जी के बलिदान और माँ करणी की असीम कृपा से आज वही गाँव ग्यासणी (नोख) फलफूल रहा है ।

आज इस गाँव मैं खेतसियोत कविया है । खेतसियोत का मतलब खेतसि के पुत्रो से है । पाली जिला मुख्यालय से 65 KM की दूरी और रायपुर तहसील मे स्थित गांव नोख है । कभी भरपुर पानी ओर दुसाखिया गांव जहां हरियाली बिखरी रहती थी । पिछले 15–20 सालों से रायपुर बांध के कारण कुओं मे पानी कम पड़ गया है ।अभी मेंहन्दी की फसल खूब होती है ।

कविया गोत्र के 40–45 परिवार रहते है । हर परिवार में ओसतन तीन सरकारी नोकरहै । 20 गजेटेड अफसर है। नोख जैतारण सोजत मार्ग पर स्थित है । शानदार कवि हुए है ।गांव आज भी हराभरा है । कभी अकाल नहीं पड़ा ।आज सभी आधुनिक सुविधाएं है ।आईए हम उस चारण वीर की शहादत को याद करते हुए खेतसी कविया को नमन करते है ।

जय माँ करणी . . . . . .

संकलन- विकास सिंह कविया

श्री नारायण सिंह गाडण 'जन्म शताब्दी समारोह'

प्रतिभाओं को सम्मानित करने की परंपरा के प्रणेता स्वर्गीय नारायण सिंह जी गाडण की स्मृति में एतिहासिक सम्मान समारोह बीकानेर में आयोजित किया गया।'

चारण मरकर भी अमर होने की कला जानते थे–बारहठ

दो दिवसीय चारण नारायणसिंह गाडण जन्म शताब्दी समारोह दिनांक 11व 12 अगस्त 2018 को बीकानेर स्थित रिद्धि–सिद्धि मैरीज पेलेस व संस्कार सदन ,बीकानेर में मनाया गया।

समारोह के पहले सत्र में समाज ,साहित्य,प्रशासनिक ,खेल ,पत्रकारिता, गायन आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त करने वाली चारण समाज के साथ ही इतर समाज की प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं की संख्या तकरीबन 150 से ऊपर थी।

समारोह आयोजक श्री जगदीशराज सिंह शुभमसिंह गाडण के अनुसार इतर समाज के लोगों में लूणाराम मेघवाल दासोड़ी ,जो वाणी गायक के रूप मसहूर है के साथ ही वाणी साहित्य पर काम करने वाले सूरजाराम रेगर 'जिज्ञासु' ,दिव्यांग अध्यापक राजाराम चौधरी ,करनीजी पर पीएचडी करने वाली मनीषा शर्मा, आदि उल्लेखनीय नाम है।

पहला सत्र सम्मान समारोह का था।जिसकी अध्यक्षता पदमश्री चंडीदान देथा ने की तो मुख्य अतिथि पदमश्री सूर्यदेव सिंह बारठ थे।मंचासीन सारस्वत अतिथि थे डॉ हाकमदान चारण कुलपति बीटीयू बीकानेर, कैलाशदान सांदू ,मुख्य अभियंता कोटा,शेषकरणदान देपावत, अध्यक्ष करनी मंदिर निजी प्रन्यास देशनोक, समाजसेवी कल्याणसिंह कविया,भागीरथसिंह सुरतपुरा,डॉ गुलाबसिंह, श्रीमती नंदादेवी आदि।

प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए पदमश्री सूर्यदेव सिंह बारहठ ने कहा कि चारण नारायणसिंह मरकर भी अमर होने की कला जानते थे।उन्होंने अपना हृदय विशाल रखा ।संकुचित लोगों की तरह दीपक दरवाजे के पीछे नहीं अपितु देहरी पर प्रज्ज्वलित किया ताकि उसके आलोक से लोक प्रदीप्त हो सके।

श्री बारहठ ने कहा कि चारण ने समाज हित संधान में अपना तन–मन–धन समर्पित कर दिया था। सही भी है कि देने वाले को दुनिया याद करती न कि लेने वाले को–

मूंजीड़ा मर जावसी ,भीड़ी मुद्दड़ियांह।
मधकर चंगां माणसां, रहसी गल्लड़ियांह।।

जो चित के चंगे होते हैं बातें उनकी कही जाती है।

इसी सत्र में बहुभाषी कवि सम्मेलन हुआ।जिसमें डिंगल़, राजस्थानी, उर्दू, व हिंदी की काव्य सलिला प्रवाहित हुई।

'चारण तो निर्भीकता के पर्याय हैं–संवित् सोमगिरि'

चारण नारायणसिंह गाडण जन्म शताब्दी का मुख्य समारोह लालेश्वर महादेव मंदिर अधिष्ठाता, संवित् सोमगिरिजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ।कार्यक्रम की अध्यक्षता पदमश्री सी. पी. देवल ने की तो मुख्य अतिथि प्रो.हाकमदान चारण कुलपति बीटीयू बीकानेर थे। मंचासीन सारस्वत अतिथि थे डॉ आईदानसिंह भाटी,वरिष्ठ कवि मोहनसिंह रतनू(से.नि.आरपीएस) चंदनदान चारण एड.एसपी कमिश्नरेट जयपुर ।

इस समारोह में मध्यकाल के महान भक्त कवि केसोदास

गाडण की अमर कृति 'विवेक वार निसाणी' जो वेदांत पर आधारित है के साथ ही 'चारण चंद्रिका' ,ढलगी रातां!बहगी बाता!! (गिरधरदान रतनू दासोड़ी) 'तोगा री तरवार'(सुरेश सोनी)व 'मणिधर माण मरदण'(मनोज गाडण) विमोचित की गई।

समारोह में आशीर्वचन देते हुए स्वामीजी ने कहा कि साहित्य की शक्ति निर्विवाद है लेकिन हमें उस शक्ति का प्रयोग करना आना चाहिए।स्वामीजी ने कहा कि भारत के सुरक्षित भविष्य के लिए हमारी अतीत में रही मानवीय भूलों को समझकर उन्हें त्याज्य करना होगा वरन हम आज भी सुरक्षित नहीं है। छूआछूत, जातीय जकड़न , तथा पद के मद को रद्द करके समरसता को अपनाना पड़ेगा।

स्वामीजी ने चारण जाति से आव्हान करते हुए कहा कि जगत रूठे तो रूठने दें लेकिन ठकुर सुहाती न कहकर अपनी बेबाकी की मिसाल कायम रखें।अगर चारण ने सत्य उच्चारण छोड दिया तो अन्याय अत्याचार व अनाचार के खिलाफ कौन कलम उठाएगा?अतः चारण अपनी निर्भीकता बनाएं रखें।स्वामीजी ने कहा कल रात्रि को बीकानेर में चारण कवि सम्मेलन था और मैं उसका समयाभाव के कारण रसास्वादन नहीं कर सका इसका मुझे मलाल रहेगा।

विमोचित पुस्तकों के लेखकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप व्यापक दृष्टिकोण के साथ लिखें तो साथ ही सत्य तथ्यों को भी आत्मसात करें।

सुरेश सोनी की पुस्तक तोगा री तरवार पर चर्चा करते हुए स्वामीजी ने कहा कि कितनी विडम्बना थीं कि एक महान योद्धा को अहम संतुष्टि की खातिर बलि चढा दिया गया और ब्रह्म शक्ति, क्षात्र शक्ति तथा चारण शक्ति मूकाभिनय की स्थिति में करबद्ध खड़ी रही।इन्होंने आव्हान किया कि भविष्य में हमें इस त्रुटियों की पुनरावृत्ति नहीं करनी है।

स्वामीजी ने कहा कि इस कार्यक्रम को आयोजित कर गाडण परिवार के जगदीशराज सिंह अपने पितृ ऋण से उऋण हो गए हैं। जो पिता की मंशा पूर्ति करता है ।

समारोह में मंचासीन अतिथियों नीचे उतरकर श्री सूंधा का सम्मान किया-

पेशे से शिक्षक तथा मनशा ,वाचा ,कर्मणा समाज सेवा से जुड़े नारायणदान सूंधा छोटड़िया जो कि शारीरिक रूप से तो दिव्यांग हैंलेकिन मानसिक रूप से दृढ़ है, इनका11 व 12 अगस्त 2018 को चारण नारायणसिंह गाडण जन्म शताब्दी समारोह के तहत एक भव्य समारोह में सम्मान किया गया।

जब इनका नाम पुकारा गया तब इनकी समाज के प्रति हितैष्णा के भावों को दृष्टिगत रखते हुए मंचासीन अतिथियों ने इनका सम्मान, ये जहां बैठे थे,वहां पर आकर किया।रिद्धि सिद्धि मैरीज पैलेस का पांडाल श्री सूंघा के सम्मान में करतल ध्वनियों से गूंज उठा।

चारण अपनी अस्मिता को समझें-पद्मश्री सी.पी. देवल

चारण साहित्य मानवीय मूल्यों के रक्षण व जीवनादर्शों को अक्षुण्ण रखने के पर्याय के रूप में समादृत हैं लेकिन पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर हमने इस साहित्य को अपने तरीकों से परिभाषित किया जो न केवल एक समृद्ध व सुदीर्घ साहित्य परंपरा को गलत तरीकों से व्याख्यित करता है बल्कि निष्पक्ष पाठक को दिग्भ्रमित भी करता है। पदमश्री सी पी देवल ने 'संस्कार सदन' बीकानेर में आयोजित 'चारण नारायणसिंह गाडण जन्म शताब्दी समारोह' में व्यक्त कर रहें थे।

श्री देवल ने कहा कि चारणों ने मानवाधिकारों के लिए ही नहीं अपितु वन्यजीवों के लिए भी अपना जीवन समर्पित किया है।लोग केवल गौ रक्षण की बातें करतें हैं लेकिन चारणों ने अन्य लोगों को उत्प्रेरित करने के साथ ही सैंकड़ों की संख्या में गौरक्षार्थ आत्म बलिदान दिए हैं।

जो निरंकुश सत्ता मदांधता में अपने आत्मीयजनों को भी प्रताड़ित करने से परहेज नहीं करती थीं उसको सत्य से रूबरू इन कवियों ने ही बेबाकी से करवाया था।

चारणों ने अपनी अस्मिता की रक्षार्थ अनेक अनाम उत्सर्ग किए हैं। तागा,जमर व तेलिया कर चारण विभूतियों ने आमजन की आवाज को मुखरित रखा।आमजन के हितार्थ अपना सब कुछ न्यौछावर करने के अनेक दाखले इतिहास के पन्नों में दबें पड़ें हैं,जरूरत हैं इन्हें लोक के समक्ष रखा जाए।श्री देवल ने कहा कि मुझे यह कहते हुए कोई संकोच नहीं है कि चारण वीरता की प्रतिमूर्ति थें।इन्होंने कहा कि रणांगण में जब योद्धा भिड़ते हैं तो स्वाभाविक है कि किसी एक का शिरोच्छेदन होगा ही क्योंकि यह प्रकृति का नियम हैं लेकिन स्वयं अपने हाथों से शिर काटना अथवा शरीर का प्रत्येक अंग स्वयं विच्छेद करना वीरता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण नहीं तो फिर क्या है? इन्होंने 'मिरमा-सरवल',पेमां,जोमां,लाछां,देमां आदि चारण देवियों के उदाहरण देते हुए कहा कि किस प्रकार इन विभूतियों ने आमजन के लिए जमर कर अमरत्व प्राप्त किया । ऐसे उदाहरण अन्यत्र सर्वथा विरल हैं,लेकिन इस जाति के हर गांव में एकाधिक उदाहरण सामान्य बात है।आवश्यकता है कि ऐसी अज्ञात अथवा अल्पज्ञात बातें आमजन तक बिना किसी पूर्वाग्रहों के पहुंचनी चाहिए ताकि इनका निष्पक्ष मूल्यांकन हों सकें।

पदमश्री देवल ने इस अवसर पर विमोचित पुस्तकों 'विवेक वार निसाणी' (केसोदास गाडण)को वेदांत पर लिखित अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा कि ऐसे सद्साहित्य का सतत प्रकाशन होना चाहिए तो साथ ही इन्होंने विमोचित पुस्तकों के लेखकों क्रमशः मनोज गाडण,सुरेश सोनी तथा गिरधरदान रतनू दासोड़ी को शुभेच्छाएं देते हुए कहा कि "मैं गिरधरदान रतनू को अनंत शुभकामनाएं देता हूं कि जो कार्य मैं करने की सोच रहा था वो श्री रतनू ने कर दिया ।'चारण चंद्रिका' इसका उदाहरण है।

इसमें उन हुतात्माओं के गीत हैं जिन्होंने अपनी अस्मिता का अहसास आमजन को करवाया ।जिन लोगों ने देशप्रेम, स्वामीभक्ति, स्वाभिमान की रक्षार्थ शौर्य प्रदर्शित कर एक अलग छाप छोड़ी ,उनके गीतों व गौरव बिंदुओं को संकलित व संपादित कर रतनू ने वरेण्य काम किया है।मैं इनकी भूरी–भूरी प्रशंसा करता हूं।मुझे इन्हें मार्गदर्शन देकर खुशी होगी। रतनू ऊर्जावान हैं तथा साहित्य व संस्कृति की सम्यक जानकारी भी रखतें हैं। यह प्रकाशन श्रृखला सतत चलती रहनी चाहिए ताकि लोगों को समग्र जानकारी सुलभ हों सके। मैं तो यह भी चाहता हूं चारणों द्वारा रचित 'विसहर अथवा विसर काव्य भी प्रकाश में आना चाहिए ताकि जो लोग यह मुगालता रख रहें हैं कि फला–फला लोगों ने कितनी बेबाकी से कहा है। क्योंकि जब यह काव्य प्रकाश में आ जाएग तो लोगों का यह भ्रम दूर होगा कि बेबाकी से कैसे और क्या–क्या कहा जा सकता है।

श्री देवल ने रतनू की पुस्तक 'ढलगी रातां!बहगी बातां!! को भी संग्रहणीय व सुंदर कृति बताया।इन्होंने कहा कि इन पुस्तकों के प्रकाशक भलेही साहित्य का कम ज्ञान रखतें हों लेकिन अच्छे साहित्य को संरक्षित कैसे किया जा सकता है ?यह बात प्रकाशक अच्छी तरह जानते हैं।इन्होंने इन पुस्तकों के प्रकाशक श्री चंदनदान बारठ व जगदीशराज सिंह गाडण को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह भाव नैरंतर्य बनाएं रखें।

11 अगस्त 2018 को बीकानेर में "चारण नारायण सिंह गाडण जन्म शताब्दी समारोह" के २ दिवसीय आयोजन में अनेक प्रबुद्ध विद्वानों, समाज सेवियों के साथ charans.org वेबसाइट के कार्य को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर प्रो. हाकम दान चारण, डॉ आईदान सिंह भाटी चंदनदान बारठ तथा मोहनसिंह रतनू ने भी अपने सारगर्भित विचारों से सभा को लाभान्वित किया।

अभयकरण रतनू – दासोड़ी चारण नारायण सिंहजी गाडण जन्म शताब्दी समारोह के तहत गाडण परिवार द्वारा साहित्य के क्षेत्र में मेरे अकिंचन अवदान को स्नेह व सम्मान दिया गया।

गिरधर दान रत्नू– आभार जगदीशराज सिंह शुभमसिंह गाडण डांडूसर हाल संस्कार सदन,बीकानेर।

चारण महिला शक्ति सम्मान समारोह के साथ संपन्न हुआ 'मीरांजली'

जामनगर। हलार बाराडी क्षेत्र की 200 से अधिक महिलाओं, छात्राओं के ऐतिहासिक सम्मान के साथ मीरांजलि आयोजन विराट सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन स्थानीय स्तर पर कई ऐतिहासिक मायनों में यादगार रहा। जामनगर चारण समाज की कई संस्थाओं एवं आयोजक राजा रूडाच परिवार के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यह समारोह, स्वर्गीय मीरा बेन रुडाच की स्मृति में आयोजित हुआ उनको श्रद्धांजलि निमित्त समाज की चारण महिला एवं प्रतिभावान छात्राओं को सम्मानित करके मनाया जो एक उदाहरण के रूप में साबित हुआ। आयोजन में राजस्थान से श्री अभिमन्यु जी देथा इटली के साथ मुझे भी उपस्थित होने का सौभाग्य मिला।

देवीपुत्र चारण समाज द्वारा अपनी मातृशक्ति का सम्मान एवं प्रोत्साहन देने के इस प्रयास की सराहना करते हुए अभिमन्यु सा ने हमारे गौरवशाली दैविय इतिहास की रोचक , महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि 'आवड़ माताजी की सात बहनों में एक बहिन गेंदा माताजी का मंदिर इटली वेटिकन सिटी में आज भी मौजूद है' इसकी बहुत कम लोगों को जानकारी है।

वहां पर सातों देवियों की मूर्ति लगी हुई है जैसी अपने यहां आवड माताजी की सब स्थानों पर है। वहीं के एक लेखक पीटर ने '**Seven Sisters**' पुस्तक भी प्रकाशित की है।

'माँ करणी विश्वरूपम' एतिहासिक पुस्तक में एसे नवीन शोध व प्रसंगों एवं गौरवशाली विरासत,को सहेजते हुए शामिल किया जाएगा।

भजनानंदी फाउंडेशन का ऐतिहासिक आयोजन 26 जनवरी 2019

बन्धुओ जैसा कि सर्वविदित है कि चारण एक जाति, वर्ग या कोई वर्ण नहीं हैं बल्कि ये तो भगवान शंकर के गण हैं, चारण स्वयं में एक शक्ति है। इनकी महिमा वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत में उलेख्खित है। चारणों की संस्कृति और अस्मिता पर समस्त संसार का एकाकार रचाया गया है, जिनका समस्त संसार आज भी स्वेच्छा से अनुकरण कर रहा हैं, चारणों ने जो समस्त संसार को दिया हैं वो कदाचित और कोई नही दे सकता है। ये शिवगण चारणों की शक्तिपीठ अर्थात गुजरात और सौराष्ट्र में स्थित 'मढड़ा धाम' जहाँ माता 'सोनबाई जी' बिराजमान है। जहाँ समाज की माताएँ व बहिने दर्शनार्थ पधारकर माँ से साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती है। आप सबको पुनः यह सुचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि मढ़डा की पावन धरती पर *The Bhajananandi Foundatain* की और से दिनांक '26 जनवरी 2019' के पावन दिवस पर एक भव्य उत्सव का आयोजन किया जाएगा और इस उत्सव का नामकरण 'चारण शक्ति दर्शन' रखा गया है। उत्सव के आयोजन का मुख्य ध्येय यह है कि समस्त चारण समाज एवं सोनबाई माताजी को मानने वाला हर एक समाज उन्नति और क्रांति की और आगे बढ़े और उनका समग्र विकास हो। समस्त स्वजातीय बन्धुओ का जिस समय मढ़डा धाम में आगमन होगा उस समय नौ लाख शक्तियों की उपस्थिति होगी।

इस पुनीत अवसर पर स्वजातीय समाज के वो रत्न भी उपस्थित होगे जिन्होने अपने समर्पण सेवाभाव व चारणाचार से समाज को गौरवान्वित किया है। 'यह महायज्ञ समस्त संसार को एक नई दिशा प्रदान करेगा ।' जब जब प्रतिकुल परिस्थितिओ का उदभव हुवा है तब तब चारणों ने आगे बढ़कर समस्त संसार को नया पथ देने का कार्य किया है। 'तो आईये हम सब साथ मिलकर के इस अवसर को यादगार और अविस्मरणीय बनाकर के एक नई पहल करें ।

'सब का साथ, संस्कृति का विकास'

आप सबको मैने संक्षिप्त भाषा मे अपने हृदय के उदगार को व्यक्त करने का एक छोटा सा प्रयास किया हैं। विस्तृत तो उस पावन धरा पर माँ के दरबार मे ही बता पाऊँगा।

–आपका अपना

श्रीपालुभाई गढ़वी भजनानंदी'

'चारण युवा संघ' व्हाट्सएप ग्रुप बना सोशल मीडिया की उपयोगिता का उदाहरण

डॉ. नरेन्द्र देवल

सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग की सार्थकता को साबित करता है चारण युवा संघ! जयपुर में समाज का एक व्हाट्सएप संगठन चारण युवा संघ के नाम से शुरू होकर अब सामाजिक कार्यों में सक्रिय कार्य करने के लिए पहचाने जाने लगा है, सामाजिक सरोकारों के कार्यों में अमर शहीद प्रताप सिह बारहठ जयंती मनाना या चिकित्सा के क्षेत्र में ब्लड डोनेशन, फ्री मेडिकल चेकअप करवाने जैसे महत्वपूर्ण कार्य इस संगठन के सदस्यों द्वारा किए गए हैं। शिक्षा के लिए गाइडेंस, युवा पीढ़ी में चारण देवियों के प्रति भक्तिभाव को जागृत करने के लिए प्रत्येक चवदस को रात्रि जागरण जैसे कार्य युवा संघ द्वारा किए गए जो सतत जारी है।

यह अपने आप में अन्य संगठनों के लिए उदाहरण है आज सोशल मीडिया पर सैकड़ों व्हाट्सएप ग्रुप सिर्फ बातें करते रहते हैं ऐसे में इस व्हाट्सएप ग्रुप के सदस्यों ने धरातलीय कार्य करके सबका दिल जीता है चारण युवा संघ के एडमिन अभिनव सिंह कविया, डॉक्टर नरेंद्र देवल, दिलीप सिंह नोख, दौलत सिंह सेवापूरा, भास्कर सिंह भादा कचोलिया भवानी सिंह नोख, भूपेंद्र सिंह झोडुदा, विरेंद्र सिंह सुरपुरा राम सिंह खेण, भैरू सिंह अखेपुरा महेंद्र सिंह गाडण, हरमाड़ा प्रमुख है।

पद्मश्री चन्द्रप्रकाश देवल को कन्हैयालाल पारख सम्मान

साहित्य जगत की ख्यातनाम हस्ति पद्मश्री चन्द्र प्रकाश देवल को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित कन्हैयालाल पारख राजस्थानी साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई । प्रयास संस्थान चुरू की ओर से यह पुरूस्कार राजस्थानी साहित्य में देवल के समग्र योगदान पर दिया जाएगा । प्रयास संस्थान के अध्यक्ष दुलाराम सहारन ने बताया कि आगामी दिनों में चूरू में होने वाले समारोह में देवल को पुरूस्कार स्वरूप 51,000 रूपयें शॉल, श्रीफल और प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा । सूर्यमल मीसण ने वंश भास्कर जैसे अमर महाकाव्य के नौ खण्डो का सम्पादन और टिका महत्वपूर्ण कार्य किया । पद्मश्री चन्द्र पकाश देवल को कई ख्यातनाम संस्था एवं संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है । जिसमें चारण समाज की करणी सेवा मण्डल द्वारा कविराज शावलदान आसिया पुरूस्कार भी प्रदान किया गया।

करणवीर का पी एच डी के लिए जर्मनी में चयन

पाली जिले के कागडी निवासी करणवीर सिंह आढ़ा का चयन टेक्निकल यूनिवर्सिटि ब्राउंच वेग जर्मनी में हुआ है। करणवीर को जर्मनी सरकार द्वारा प्रतिवर्ष जर्मन सरकार द्वारा 32975युरो (लगभग 28 लाख रुपए) स्कॉलरशिप मिलेगी। पीएचडी में करणवीर सिंह का शोध का विषय इंटीग्रेटेड आप्टो, इलेक्ट्रॉनिक्स डिवाइस फॉर ब्राडबेंड डिजीटल टू एनालाग कनवशन (डी ए सी) रहेगा। स्कॉलरशिप के साथ सब प्रकार का शिक्षण शुल्क जर्मनी सरकार वहन करेगी। करणवीर ने भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान तिरुअनंतपुरम केरला से भौतिक विज्ञान एवं गणित में बीएसएमएस की शिक्षा गत वर्ष पूर्ण की एवं वर्तमान में टेक्नो सर्विस बेंगलुरु में पदस्थापित है।

करणवीर माह नवंबर के अंत में जर्मनी के लिए रवाना हो रहे हैं। करणवीर सिंह के पिता श्री गोविंद सिंह आढ़ा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाली में नर्स श्रेणी प्रथम के पद पर कार्यरत हैं एवं इनकी माता गृहणी हैं। करणवीर की बहने एक दिल्ली यूनिवर्सिटी के गार्गी कॉलेज में पढ़ रही है शिक्षक की तैयारी कर रही है करणवीर की दसवीं तक की शिक्षा फैबइंडिया स्कूल बाली से एवं 12वीं तक की शिक्षा जोधपुर से सम्पन्न हुई है।

पुस्तकालय की सुविधा प्रदान करने वाला प्रथम छात्रावास

श्री करणी चारण छात्रावास, जालोर

मारवाड़ क्षेत्र का एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण क्षेत्र है जालोर। ऋषि जाबालि एवं महाकवि माघ की जन्म एवं कार्यस्थली वाले इस जिले में चारण समाज की पहचान बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में रही है, जिले में चारण सरदारों के करीब 40 जागिरी गांव है सरकारी क्षेत्र में प्रारंभिक वर्षों में अधिकांश शिक्षक ही थे बाद में कुछ अन्य सेवाओं में भी चारण सरदार पद स्थापित हुए सिविल सेवा में जालोर जिले में आईएएस भर्ती से एकमात्र चयनित एवं कार्यरत श्री अजीत दान देवल आईआरएस गंगावा से है ।तथा आर.ए.एस भर्ती से चयनित श्री नारायण सिंह सुरताणीया मिंडावास, (उप रजिस्ट्रार सहकारिता) आवड़दान सुंघा धुलिया (विकास अधिकारी) मनोहर सिंह कोटड़ा श्रम निरीक्षक एवं समझौता अधिकारी एवं हिंगलाज दान पुनावास (सहकारिता निरीक्षक) है

जालोर में श्री करणी चारण छात्रावास की स्थापना–

प्रारंभ में रियासतों की राजधानियों पर चारण समाज के छात्रावासों की स्थापना हुई तत्पश्चात जिला एवं उपखंड स्तर पर समाज के छात्रावास की स्थापना हुई इस क्रम में जालोर जिला मुख्यालय पर बागरा रोड पर श्री करणी चारण छात्रावास का शिलान्यास वर्ष 2006 में हुआ, नवनिर्मित छात्रावास का उद्घाटन वर्ष 2013 में हुआ। वर्तमान में छात्रावास परिसर में श्री करणी माताजी के मंदिर का कार्य निर्माणाधीन है ।

जालौर में सर्व सुविधा युक्त आधुनिक पुस्तकालय की स्थापना

छात्रावास के निर्माण के पश्चात कुछ वर्षों तक विद्यार्थियों की संख्या अच्छी रही लेकिन बाद के वर्षों में छात्र संख्या कम होने पर समाज के वरिष्ठ बंधुओं ने युवाओं का आव्हान किया, जिले के युवा प्रशासनिक अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने गहन विचार–विमर्श प्रारंभ किया इसी बीच श्री वीरदान वणसूर नांदिया ने 4 जून 2017 को चारण युवा संगठन जालौर नाम से एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया। इस ग्रुप में वर्तमान में 240 सदस्य हैं यह ग्रुप आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है ग्रुप के माध्यम से अब तक लगभग ₹200000 का योगदान पुस्तकालय निर्माण एवं अन्य कार्यों में किया जा चुका है। समाज के वरिष्ठ जनों के आशीर्वाद के पश्चात युवा सरदारों ने जालौर छात्रावास में सर्व सुविधा युक्त अत्याधुनिक पुस्तकालय की स्थापना का संकल्प लिया। इस बाबत् प्रदेश के आईएएस अधिकारियों एवं सुधी पाठकों से विचार–विमर्श करके आवश्यक पुस्तकों की सूची तैयार की गई। सूची के अनुसार पुस्तकों की खरीद जयपुर एवं जोधपुर से जुलाई 2017 में की गई उधर छात्रावास समिति ने दिन रात मेहनत करके पुस्तकालय हॉल में फर्नीचर अलमारीयों एवं एसी की व्यवस्था की। छात्रावास में मात्र 2000 महीने का शुल्क लिया जाता है जिसमें आवास इत्यादि समस्त सुविधाएं प्रदान की जाती है बाकी खर्च समाज के सदस्यों द्वारा सब्सिडी के रूप में छात्रावास संचालन समिति को दिया जाता है ।वर्तमान में जालौर चारण छात्रावास में विश्व भारत भूगोल इतिहास राजनीति विज्ञान अर्थशास्त्र हिंदी अंग्रेजी विधि राजस्थानी साहित्य चारण साहित्य लोक देवी साहित्य हिंदू धार्मिक साहित्य की महत्वपूर्ण पुस्तकों हिंदी अंग्रेजी एवं राजस्थानी भाषा में आवश्यकता अनुसार के अलावा आई ए एस आर ए एस आर जे एस बैंकिंग एसएससी रेलवे पुलिस पटवारी ग्राम सेवक समेत समस्त महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध है पुस्तकालय में एसी ,आर ओ वाटर वाटर, कूलर एवं वाचनालय का समुचित प्रबंध है। विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुसार प्रति माह पुस्तकें जयपुर से मंगवाई जाती है। पुस्तकालय में समय–समय पर प्रशासनिक अधिकारियों एवं शिक्षाविदों द्वारा छात्रावास में

निवासरत विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया जाता है। वर्तमान में छात्रावास में 40 से अधिक छात्र निवासरत है जो जालौर पाली सिरोही जोधपुर बाड़मेर नागौर इत्यादि जिलों के निवासी हैं पिछले दो–तीन वर्षों में जालौर चारण छात्रावास के अनेकों विद्यार्थी सरकारी सेवा में चयनित होकर पदस्थापित हुए हैं। पुस्तकालय के भविष्य की योजना प्रारंभ छात्रावास जालौर में स्थापित कर सुविधा युक्त आधुनिक पुस्तकालय चारण समाज में सभी छात्रावासों में एक अनूठा पुस्तकालय है चारण साहित्य शोध संस्थान अजमेर के अलावा अन्य किसी स्थान पर इतनी पुस्तकें शायद ही होगी जिले के युवा प्रशासनिक अधिकारियों शिक्षाविदों व्यवसायियों उन्नत किसानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की प्रबल इच्छा है कि इस पुस्तकालय को भव्य बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया जाए प्रारंभिक योजना के अनुसार अलग से पुस्तकालय भवन वाचनालय कैंटीन सेमिनार का स्टडी केबिन का निर्माण विचाराधीन है मां भगवती का आशीर्वाद रहा तो जल्द ही जालौर में अत्याधुनिक पुस्तकालय एवं स्टडी सेंटर का कार्य पूर्ण हो जाएगा जिसके फलस्वरूप समूचे चारण समाज के युवाओं के लिए यह अध्ययन साधना केंद्र बन पाएगा इस कार्य हेतु जिले में स्थित समाज के समस्त 40 गांव के युवा तत्पर है साथ में वरिष्ठ एवं वृद्ध बंधुओं का सहयोग भी अनवरत मिल रहा हैसमाज में पुरुषों की तुलना में शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है विगत वर्षों में समाज में बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है फिर भी शिक्षा हेतु विशेष प्रयास स्थित है समाज की प्रत्येक बालिका कम से कम स्नातक अवश्य होनी चाहिए इसके अलावा सभी को प्रतियोगी परीक्षाओं में तैयारी करनी चाहिए ताकि सरकारी तंत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जा सके।

लेखक परिचय

मनोहर सिंह कोटड़ा राजस्थान के जाने माने लेखक है। आपने 50 से अधिक पुस्तको का लेखन किया है। आप मारवाड़ क्षेत्र में जालोर जिले में कोटड़ा गांव के निवासी है। यह ठिकाना आपके पूर्वज लक्ष्मीदान जी वणसूर ने महाराजा गज सिंह मारवाड़ के शासन काल मे अहमदनगर की लड़ाई में हरावल में अद्वितीय वीरता के प्रदर्शन के उपरांत जागीर में मिला था । आपके दादोसा ठाकुर नैन दानजी वणसूर 20वी सदी मे राजस्थानी डिंगल एवं भक्ति काव्य के श्रेष्ठ कवि हुए है ।

वर्तमान में आप आर. ए. एस. 2013 बैच में श्रम निरीक्षक एवं समझौता अधिकारी ,सिरोही के पद पर कार्यरत है ।

निशुल्क मेडिकल कैंप

सोनल युवा ग्रुप द्वारा यूके के शारदा बेन दिलीप भाई रो राज के सहयोग से गोवा सी जिला गोदरा में एवं आसपास के गांव में भारी संख्या में लोगों ने मेडिकल कैंप में भाग लिया राहुल लीला गढ़वी ने बताया कि निशुल्क मेडिकल कैंप में एचसीजी हॉस्पिटल के डॉक्टर युसूफ ने उनकी टीम के साथ हरीश भाई गढवी प्रवीण भाई गोपाल भाई विठ्ठलभाई गढ़वी प्राण भाई गढवी कान्हा भाई गढवी जयंत भाई सहित सभी युवाओं ने अपनी सेवाएं प्रदान की माताजी शारदा बेन एवं दिलीप भाई राज का खूब–खूब आभार।

शक्तियों की अवतार स्थली- मीठन

विक्रम संवत 1657 में देदाजी सावल बारहठ के द्वारा मीठन गांव की स्थापना की गई । यह गांव सिरोही के शासक राव सुरताण ने देदाजी को जागीर के रूप में प्रदान किया था । यह गांव रेवदर तहसील के अंतर्गत अपनी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर के लिए अपनी अलग पहचान रखता है। सिरोही जिले से 53 किलोमीटर दूर स्थित मीठन गांव मूल रूप से चारण समाज का गांव है, यहां चारण जाति में सांवल बारहठ गौत्र के चारण निवास करते हैं। कुल 700 परिवारों का यह गांव है जिसमें 30 घर चारण समाज के हैं। इस गांव की मुख्य विशेषता यह है कि शक्तियों कि जन्मस्थली रहा है । इस गांव में एक नहीं, दो नहीं , बल्कि तीन–तीन शक्तियों देवियों ने अवतार लिया हैं, जिन्होंने गांव, क्षेत्र के लोगों का दुख निवारण किये। विक्रम संवत 1695 के करीब गांव मीठन में आई धूनल ने शक्ति के रूप में अवतार लिया विक्रम संवत 1865 के करीब हरिया माता ने शक्ति के रूप में अवतार लिया। और विक्रम संवत 1947 में गैरों मां ने यहां की पुण्य धरा पर अवतार लिया। आज मीठन गांव के चारणों द्वारा तीनों शक्तियों हरिया मां, धूनल मां, और गेरों मां की पूजा आराधना की जाती है। आसपास के गांव से भी शक्तियों के प्रति श्रद्धा भाव है इसी के साथ गांव में जुझार जी बावजी का भी एक चमत्कारी स्थान है जहां पर ग्रामीण प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष महीने की पूर्णिमा को मेला करते हैं जिसमें दूर–दूर से अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आस लेकर आते हैं। स्वर्गीय उमरदार जी को मीठन में झुझार जी की मान्यता से पूजा जाता है। जिनका कुएं में स्वर्गवास हो गया था इस बात का आभास हरिया माताजी ने 1 दिन पूर्व उनके काकी सा को बता दिया था, मगर उन्होंने इस बात पर विश्वास नहीं किया। कुंए में उमरदान जी के ऊपर सिर पर पत्थर गिरने से स्वर्गवास हो गया। वही उमरदान जी आज जुझार जी बावजी के रूप में पूजे जाते हैं इनके पिता लालू दान जी, माता सागर कंवर थे।

धूनल माता : मीठन गांव में धूनल माता जी का जन्म शिवराज जी बारहठ के घर हुआ। आप हरिया माताजी की बुआ थी। एक बार धुनल माता जी के पिता शिव दान जी बारहठ हिंगलाज माता के दर्शन के लिए पाकिस्तान गए थे वहां पर पहुंचने के थोड़े समय बाद अपना ध्यान भंग हो गया तथा उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था तब उन्होंने वहीं रहकर 6 महीने तक हिंगलाज माता जी की पूजा आराधना की , माताजी उनकी भक्ति भावना से प्रसन्न हुए और प्रकट होकर शिवदान जी महाराज से वरदान मांगने को कहा तब उन्होंने माता जी से कहा मुझे अपने गांव मीठन वापस जाना है लेकिन मुझे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है माताजी ने उन्हें वर स्वरूप आकाश में उड़ने वाली एक चमत्कारी घोड़ी दी और कहा कि यह घोड़ी किसी अन्य व्यक्ति को मत देना वरना यह घोड़ी पत्थर का स्वरूप धारण कर लेगी। तब शिवदान जी बारहठ मां हिंगलाज से आशीर्वाद प्राप्त कर घोड़ी पर बैठकर मीठन गए। कुछ ही समय बाद इस घोड़ी के चमत्कार की बात आसपास क्षेत्रों में फैल गई तब सिरोही दरबार राव अखेराज ने इस चमत्कारी घोड़ी के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिये उन्हें पता चला कि यह चमत्कारी घोड़ी मीठन के शिवदान जी बारहठ के पास हैं, तब सिरोही दरबार स्वयं चलकर मीठन आए तथा शिवदान जी से घोड़ी मांगी।

शिवदानजी ने दरबार को घोड़ी देने से इंकार कर दिया और कहा कि ये चमत्कारी घोड़ी मैं किसी को नहीं दूंगा। महाराव ने बात को स्वीकार करते हुए कहा कि आप घोड़ी मुझे नहीं दे रहे हो परन्तु किसी और को भी मत देना। इस प्रकार बातचीत के बाद महाराव वापस सिरोही आ गए। कुछ दिनों बाद नीबंज ठाकुर को इस चमत्कारी घोड़ी के बारे में जानकारी मिलीं उन्होंने इस घोड़ी को प्राप्त करना चाहा तो मीठन के शिवदान बारहठ ने घोड़ी भेंट? कर दी। इस खबर को सुनकर सिरोही दरबार ने

मीठन पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दी। राजा की चढ़ाई की खबर सुनकर माता जी के भाई व भौजाई अपने वंश की लाज रखने के लिए प्राणों का त्याग करने चले, तब धुनल माताजी की उम्र 10 वर्ष की थी वे घर के बाहर बिराजे थे।

उन्होंने अपने भाई से पूछा आप कहां जा रहे हो तो उन्होंने सामान्य बालिका समझ कर पूरी बात सही तरह नहीं बताई तथा कहा कि हम अभी वापस आ रहे हैं। तब धूनल माता ने उनसे बार–बार आग्रह किया कि बताओ आप कहां जा रहे हो तब उनके भाई भोजाई ने धूनल मां को घोड़ी वाली बात राजा की चढ़ाई व लड़ाई के बारे में पूरी जानकारी दी ।इस बात को सुनते ही मां ने चमत्कार दिखाया, नौ हाथ लंबे लोहे के दांत वाले सिंह का रुप धारण किया। भाई–भोजाई ने चमत्कार को नमस्कार किया व कहीं नहीं जाने का वचन दिया। थोड़े समय बाद से ही दरबार राव अखेराज ने चढ़ाई कर दी तब मां ने सिंह का रूप धारण कर दरबार को उसकी घोड़ी से नीचे गिरा दिया तथा दरबार को सिंह के रूप में दबा दिया ।

तब सिरोही दरबार ने माता जी के भाई से आग्रह किया कि आप इस सिंह को दूर करो तब उन्होंने कहा कि अब सिंह को दूर करना हमारे बस की बात नहीं है तब सिरोही दरबार ने साक्षात् देवी मां से अपनी करनी के लिए माफी मांगी व वचन दिया कि आज के बाद कोई राजा मीठन गांव पर चढ़ाई नहीं करेगा और कोई सच्चा राजपूत घोड़ी पर सवार होकर गांव में नहीं आएगा। इस प्रकार धूनल मां ने दरबार से वचन लेकर उसे छोड़ दिया। थोड़े समय में उसी स्थान पर माताजी ने राव अखेराज के सामने ही दो बड़े वृक्षों को ऊपर से पकड़ कर दो झूले खाने के बाद तीसरे झूले में माता जी ने आकाश में गमन कर दिया।

माता जी के इस चमत्कार को साक्षात् देवी समझकर उनके चमत्कार को याद करते हुए दरबार सिरोही प्रस्थान कर गए।

–भरत सिंह चारण

डा कुलदीप सिंह बीठू

वरिष्ठ विशेषज्ञ शिशु रोग विभाग सरदार पटेल मेडीकल कालेज एवम संबन्ध पी. बी.एम. अस्पताल बीकानेर राजस्थान

जन्म तिथि –07.01.1972

जन्म स्थान– कविराजा विभुतिदान जी की हवेली लालसिंहपुरा सींथल बीकानेर

शिक्षा – प्राथमिक शिक्षा आर्य समाज स्कूल रथ खाना मिडील एवं हायर सैकण्डरी सादुल पब्लिक स्कूल बीकानेर

स्नातक– डुंगर महाविद्यालय, एम बी बी एस एवं एम डी पीडीयेटरीक्स सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज बीकानेर

राजकीय सेवा– 30.10.1997 से आर पी एस सी द्वारा चिकित्सा अधिकारी नियुक्ति

सम्मान– श्री करणी मंदिर निजी प्रन्यास देशनोक द्वारा
श्री करणी चारण छात्रावास द्वारा
जिला प्रशासन बीकानेर द्वारा
प्रधानाचार्य सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज द्वारा
अन्य कई प्रकार की सामाजिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न समाजों द्वारा
ट्रस्टी आऊवा सत्याग्रह उद्यान जिला पाली राजस्थान
श्री चारण गढवी सेवा संस्थान हरिद्वार उत्तराखंड
श्री करणी मंदिर सींथल बीकानेर
श्री धुणी नाथ मठ एवं पंच मंदिर बीकानेर

पुस्तक संकलन

डॉ. गुमान सिंह बीठू / व्यक्तित्व एवं कृतित्व / विशेष आरती संग्रह

सामाजिक सरोकार

समाज सेवा विरासत में मिली पिता डॉ. गुमान सिंह बीठू पूर्व सरपंच सींथल बीकानेर एवं पूर्व अध्यक्ष मंडलीय चारण महासभा बीकानेर

एवं अन्य पूर्वजों का समाज से जुडाव रहा और पिछले 150 सालों से बीकानेर मे रहते हुए भी गांव वालों ने मेरे पिताजी एवं धर्मपत्नी को सरपंच बनाया।

चिकित्सा सेवा में सदैव समाज के लोगों की निरंतर सेवा करने का मौका मिला ।

समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के रूप में शामिल होने का एवं एक कार्यकर्ता की हैसियत से काम करने का जज्बा।

हरिद्वार में श्रीमद् भागवत कथा के आयोजन का 13 वर्ष का अनुभव एवं गांव सींथल देशनोक और आसपास के इलाकों में धार्मिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भागीदारी एवं आर्थिक सहयोग देश एवं प्रदेश के विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भागीदारी करना ।

रेत के धोरों से रेवन्तदान का सूरज को न्योता

हाल ही में साहित्य अकादमी के सौजन्य से हिन्द युग्म प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक सूरज को न्योता प्रकाशित हुई हैं जो एमेजॉन पर (**AMAZON**) पर बेस्ट सेलिंग पुस्तक में गिनी जा रही हैं । पुस्तक कें लेखक डॉ. रेवन्त दान का साक्षात्कार–

साहित्य लेखन से जुड़ाव– बचपन से रचनात्मक और सृजनात्मक गतिविधियों में उत्साह से भाग लेता आया हूँ। तेरह वर्ष की उम्र में विभिन्न बाल पत्र–पत्रिकाओं में चित्र,कविताएँ,निबंध प्रकाशित होने लगे । एक अलग पहचान कम उम्र में मिली जिसने और बेहतर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मेरा जन्म जिस चारण समुदाय में हुआ है उसकी एक समृद्ध और गौरवशाली साहित्यिक परंपरा रही है,कविता मुझे उसी समृद्ध परंपरा से विरासत में मिली जिसे युग के अनुरूप और परिष्कृत रूप से लिखने का प्रयास निरन्तर जारी है ।

कविता में थार के रेगिस्तान के लोग जीवन को कैसे परिभाषित करते है? इस प्रश्न पर रेवंत का कहना है कि सच कहूँ तो पहला प्रेम रेगिस्तान ही है जिसकी जीवंतता ने लिखने के लिए प्रेरित किया। थार कोई विषम भौगोलिक परिस्थिति वाले भूभाग का नाम नहीं वरन सभ्यता और संस्कृति की एक पाठशाला है।यहाँ का 'मिनखपणा' संसार में विख्यात है। मेरी अधिकांश कविताओं में थार का वर्णन है। जीसमें थार की वनस्पति के अद्भुत फूल 'जोगी',थार की गंगा 'लूणी' विलुप्त नदी सरस्वती,सम के धोरे, साठीका कुओं का पानी,लोक संस्कृति को विदेशों में जीवित करने वाले मांगणियार, विषम परिस्थितियों में अटूट जिजीविषा के साथ जीवन जीने यहाँ के किसान,गड़रिये और दिहाड़ी मजदूरों का जिक्र मेरी कविताओं में हुआ है जिसे पढ़कर आप रेगिस्तान के कवि की उसकी मातृभूमि के प्रति संवेदना को समझ सकते हैं।

रेवंत ने लेखन का सिलसिला आगे बढ़ाने पर बताया कि अभी वे साहित्य लेखन में अभी सिर्फ काव्य रचना में सक्रिय है। उनकी पीएचडी हिंदी–उर्दू ग़ज़ल पर हुई है अतः कविता के उर्दू काव्यरूप ज्यादा आकर्षित करते हैं ख़ासकर ग़ज़ल और नज़्म को सीखने और समझने का प्रयास कर रहे

"मेरे लिए कुछ मत मांगना
मत करना अरदास मूक भगवानों के सामने...
धूप ही धूप मांगना मेरे लिए"

कवि का अपनी माँ से आग्रह

हैं। राजस्थानी भाषा में छंदमुक्त कविताएँ लिख रहा हैं। अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों को मायड़ भाषा में अनुवाद करने की भी एक दीर्घगामी योजना है।

डिंगल का साहित्य की धारा में शामिल नहीं होने पर रेवंत का कहना है।

डिंगल काव्य परम्परा संसार की विरली और श्रेष्ठ काव्य परम्पराओं में एक है। इसकी तुलना युरोप के रोमेंटिसिज्म से की जा सकती है परंतु यह सच है कि इस काव्य शैली का सही मूल्यांकन और साहित्य में समुचित न्याय अभी तक नहीं हुआ है। वाचिक और श्रुति परम्परा में चली इस डिंगल काव्य परम्परा को संवैधानिक मान्यता का न मिलना भी एक रुकावट है लेकिन इन सबके बावजूद डिंगल के कई लुप्तप्राय अज्ञात कवियों को प्रकाशित साहित्य में लाना एक युगांतरकारी कार्य होगा। पिछले कुछ समय से कई मायड़भाषा प्रेमी इस भाषा के हितार्थ कार्य कर रहे हैं उन्हें भी प्रोत्साहित किये जाने की जरूरत है।

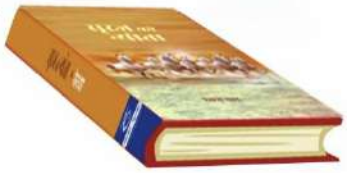

विश्व और भारत की अन्य भाषाओं के मुकाबले हिंदी की वर्तमान स्थिति और उसमें लिखे जा रहे साहित्य के बारे में कहते हैं संसार की भाषाओं की जननी हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत रही है अतः मुकाबले जैसी कोई बात ही नहीं है।भारतीय भाषाओं और हिंदी में बेहद गुणवत्ता वाला साहित्य रचा गया है। खड़ी बोली हिंदी से आधुनिक देवनागरी तक के हिंदी साहित्य के वृहद पटल को देखें तो हमारे यहाँ एक से बढ़कर एक साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने युगधर्म और कालधर्म को दृष्टि प्रदान की है। यही बात राजस्थानी साहित्य पर लागू होती है क्योंकि हिंदी का आदिकाल राजस्थानी के डिंगल कवियों की पृष्ठभूमि से निर्मित है। हिंदी और राजस्थानी की वर्तमान स्थिति संतोषजनक है पर हमें पुराने साहित्यिक मापदण्ड की प्राचीरों को तोड़कर नए प्रयोग करने होंगे जिससे हमारी भाषा की संवेदना वैश्विक हो सके।

नाम- **डॉ. रेवन्तदान बारहठ**
जन्म- **15 जून 1982**
गाँव- भींयाड़ – जिला बाड़मेर(राज.) में
पिताजी- स्व. मंगल दान बारहठ
माताजी- नेनु कंवर
शिक्षा- एम.फिल.(तुलनात्मक साहित्य) –महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा (महाराष्ट्र)
पीएचडी- 'समकालीन हिंदी उर्दू ग़ज़ल का तुलनात्मक अध्ययन' –राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
नेट-जे आर एफ –यूजीसी दिल्ली।
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा की 'अभिव्यक्ति' पत्रिका के सात अंकों का सफल सम्पादन।
'13 वर्ष की उम्र से प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में चित्र,कार्टून,कविता,निबंध प्रकाशन।
'चित्रकला में राष्ट्रीय पुरस्कार
'**NCC** का **C** सर्टिफिकेट '**A**' ग्रेड के साथ उतीर्ण।
'कविता,ग़ज़ल,शोधपरक आलेख सभी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित।
'राजस्थानी,हिंदी,उर्दू तीनों भाषाओं में कविता लेखन।
'पुर्तगाल में भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी और वहाँ भारत सरकार के वाणिज्यिक प्रतिनिधि श्री अमराराम द्वारा आपकी कविताओं का पुर्तगाल की लिस्बन यूनिवर्सिटी में काव्यपाठ।
'लोक गायकों और मांगणियारों द्वारा आपकी कई गज़लों को स्वर दिया गया है।
'कई अकादमिक,साहित्यिक और राजनीतिक आयोजनों का सफल मंच संचालन
'आल इंडिया रेडियो के विभिन्न केंद्रों और दूरदर्शन समेत कई चैनल से काव्यपाठ का प्रसारण।
मॉरीशस में भारतीय राजदूत श्री के.डी. देवल द्वारा वहाँ हिन्दी दिवस आयोजन में आपकी कविताओं का पाठ।

क्रांतिवीर केसरी सिंह जी बारहठ की 146 वी जयंती पर अनेक आयोजन

सीकर :–

क्रांतिवीर केसरी सिंह जी बारहठ की 146 वीं जयंती आज श्री करणी चारण छात्रावास सीकर के प्रांगण में हर वर्ष की भांति प्रतिभा सम्मान समारोह के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति हाकम दान जी चारण ने समाज की प्रतिभाओं को सामाजिक सरोकार में अपनी यथा साध्य भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया तथा केसरी सिंह जी बारहठ कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए समाज को उनके बताए मार्ग पर चलने की आवश्यकता पर बल दिया इस कार्यक्रम में युवा रघुवीर सिंह ने केसरी सिंह जी बारहठ के दोहों का राजस्थानी भाषा में वाचन किया समाज की विभिन्न प्रतिभाओं का इस कार्यक्रम में सम्मान किया गया। जिसमें हाल ही में आदर्श विवाह करने वाले दीपक बारठ को भी सम्मानित किया गया शेखावाटी चारण महासभा के अध्यक्ष शैतान सिंह जी कविया लक्ष्मण जी कविया आदि ने उद्बोधन दिये थे। अरविंद जी सामोर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन दिनेश सिंह खिड़िया ने किया। इस अवसर पर समाज के कई प्रतिभावान छात्र–छात्राएं गणमान्य व्यक्ति और मातृशक्ति ने उपस्थिति दर्ज कराई ।

जोधपुर:–

आज क्रांतिकारी ठाकुर श्री केसरी सिंह जी बारहट की जयंती जोधपुर में हर्ष और उल्लास के साथ मनाई गई, जिसमें समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता एवं उपस्थिति प्रदान की । यह दिन श्री केसरी सिंह बारहठ चारण सेवा संस्थान के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस सेवा संस्थान का गठन ही क्रांतिकारी ठाकुर केसरी सिंह जी बारहठ के नाम पर हुआ है। जो चारण समाज के लिए माताजी के पश्चात सर्वाधिक श्रद्धा के साथ लिया जाता है। और गौरवपूर्ण होने के साथ–साथ हमारे अंदर एक नवीन ऊर्जा का संचार करता है । आज श्री केसरी सिंह बारहठ चारण सेवा संस्थान के सदस्यों ने चारण छात्रावास जोधपुर में स्थित स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर श्री केसरीसिंह बारहठ की प्रतिमा पर, शाम 4:00 बजे पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। श्री गोपाल सिंह जी कीनिया श्री मनजीत सिंह जी चारण, सरदार सिंह जी सांदू, तेजदान जी लालस, सुरेंद्र सिंह जी रत्नू, सुल्तान सिंह जी आशिया जगदीश दान कविया और अरुण कविया आदि सम्मिलित हुए ।

निर्माण कार्य आरम्भ से समाज को विस्तृत जानकारी देने एवं स्मारिका के तहत समाज को संस्था की गतिविधियों का संकलन कर प्रस्तुत करने के उदेश्य से विमोचन किया गया। पुष्पांजलि कार्यक्रम के साथ ही चारण समाज की महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक परियोजना श्री चारण गढ़वी सेवा सदन हरिद्वार के फोल्डर का विमोचन और इस परियोजना की विस्तृत जानकारी, योगदान,सहयोग एवं प्रयास के बारे में समाज को, स्मारिका तैयार करके और कलमबद्ध करने के लिए कार्य शुरू करने का संकल्प लिया गया, जिसका विमोचन संभवत श्री चारण गढ़वी सेवा सदन हरिद्वार के उद्घाटन के अवसर पर किया जाएगा।

चारण समाज के इस महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए जो टीम कृत संकल्प है और समाज के समक्ष अपने कार्य के द्वारा पहचान बनाने का आदर्श उदाहरण समाज के

समक्ष रखने जा रहा है आज हम सभी को इस भागीरथी परियोजना में तन मन धन से स्वयं का सहयोग प्रदान करने की आवश्यकता है।

परम श्रद्धेय स्वामी रामसुखदास जी महाराज कहा करते थे की "हरिद्वार वह तपोस्थली है, जहां पर किया गया पुण्य और पाप दोनों ही, करोड़ों गुना फलित होता है।" हरिद्वार में श्री चारण गढवी सेवा सदन का निर्माण हम सब के लिए स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही दृष्टि से पुण्यदायक कार्य ही नहीं बल्कि इहलोक और पारलौकिक फलदायक धार्मिक कार्य है ।

इस महान और दैवीय कार्य का योगक्षेम स्वयं माताजी वहन कर रहे हैं और स्वनामधन्य श्री केसरीसिंह बारहठ जैसे महान व्यक्तित्व के नाम की ऊर्जा से यह पावन परियोजना अतिशीघ्र भौतिक धरातल पर आपके समक्ष होगी।

बीकानेर :–

साहां ने शुभराज, दीधा कैई 'क दूधीया।
गोरां उपर गाज, करग्यो एक 'ज कैहरी।।

आज बीकानेर मांय अमर शहीद केसरी सिंह जी बारठ री जयन्ती दम्माणी धरमशाला जे बी नर्सिंग क्लासैज अर चारण छात्रावास मै घणै उच्छब अर हरख सूं मनाईजी। जिण बारठ परिवार स्वतंत्रता रै यज्ञ मै आपरै पूरै परिवार री हवी आहूत करी। भाई जोरावर सिंह बारठ,दामाद इश्वर दान जी आशिया अर पुत्र अमर शहीद कुंवर प्रताप सिंह बारठ जिका ब्रिटिश हुकूमत मै जैळ मै अमानवीय यातनावां सहन करतां सहादत पाय अमर हुया पण रासबिहारी बोस अर आपरा साथीयां रो पतो नी बतायो अर उणां रो आदर्श वाक्य घणो जग चावो है अर स्वतन्त्रता संग्राम मै स्वर्णिम आखरां मै ओपै।

"मेरी मां रोती है तो रोने दो मैं अपनी एक माँ को हंसाने के लिए हजारो मांओं को नही रूला सकता"

स्वनामधन्य केसरी सिंह जी बारठ रो जन्म शाहपुरा मे हुयो। आप बाल्यावस्था मे ही स्वामी दयानंद सरस्वती जी रे सम्पर्क मे उदयपुर मै उण वगत आया जद स्वामी जी चारण पाठशाला मे बालकां ने आशिर्वाद देवण ने पधारिया। अर स्वामी दयानंद सरस्वती जी या ऐ आखर केसरी सिंहजी बारठ रै हियै माथै अमिट छाप छोड़ी –

'जाती से तो चारण हो कर्म शैली से भी चारण बनो'

श्री बारठ जी राजपूताना मे ' अभिनव भारत ' अर ' क्रांति दल' री थरपणा करी अर स्वतन्त्रता संग्राम रा आगीवाण क्रांतिकारी रास बिहारी बोस,सचिन्दरनाथ सान्याल ,मास्टर अमीरचन्द अर बसन्त कुमार विश्वास रै सम्पर्क मे आया।

आपरै चारणाचार री साख राजस्थानी साहित्य अर राजस्थान रे इतिहास मांय सोनल आखरां मे अमर है जिकी भूते न भविष्यतैः वाळी बात है

जद 1903 मै वायसराय लार्ड करजन भारतीय रियायतां माथै एकछत्र राज करण सारू दिल्ली मे दरबार आयोजित कर्यो जिणमै सगळा राजा–महाराजा ,नवाब अर रईसां नै आमंत्रित

क'या जिण निमन्त्रण नै स्वीकार कर मेवाड़ महाराणा फतह सिंह जी भी दिल्ली दरबार मे सामिल होवण सारू बहीर हुया। स्वतन्त्रता संग्राम रा आगीवाण क्रांतिकारी केसरी सिंह जी ने आ बात घणी अखरी अर मेवाड़ महाराणा ने चेतावण खातर चेतावनी रा चूंगटिया काव्य रचना मै तेरह सोरठा लिख्या जिका जद महाराणा फतह सिंह जी नै दिल्ली रे मार्ग मे सरेरी स्टेशन भीलवाड़ा मै मिल्या तो फतह सिंह जी दिल्ली पंहुच बिना उण आयोजन मे सामिल हुयां पाछा सागण पगां आया।

इण सूं बड़ो चारणाचार कांई हुवै–
जिणरी बानगी निजर है–

घण घलिया घमसाण, रांण सदां रहिया निडर।
पेखन्तां फुरमाण ,हलचल किम फतमल हुवै।।
मनां मोद सिसोदिया, राजनीति बल राखणो।
गवरमिण्ट री गोद, फळ मीठा दीठा फता।।

अद्वितीय काव्य अर घटना है

स्वतन्त्रता संग्राम मै हरावळ भूमिका निभावण रे कारण अंग्रेज हकूमत केसरी सिंह जी बारठ, शान्तभानू जी लहरी,हीरालाल जी ने धारा 302 मै आजीवन कारावास री सजा सुणाई।

चारण समाज रे इण युग पुरूष रो योगदान अणतोल अणमोल है ।

इण ऐतिहासिक जानकारी रो स्तोत्र रह्यो है परम आदरणीय श्री जगदीश दान जी रतनू दासोड़ी री पोथी" चारण समाज के गोरव"

आज इण कार्यक्रम मे प्रो. डॉ नृसिंह जी दम्माणी, पूर्व रीडर एम एल जांगीड़ सर, साहित्यकार सरदार अली जी पड़िहार, डॉ मंजूला जी बारठ (आचार्य महारानी कालेज), श्रवण राम जी कस्वां (अति निदेशक माध्यमिक शिक्षा), डॉ कुलदीपसिंह जी बीठू, डॉ जगदीश दान बारठ री घणी गरिमामय उपस्थिति रही, मंच संचालन मदन दान रतनू करयो।

कृषि क्षेत्र में मिसाल बने रतनू

केंद्र एवं राज्य स्तर पर भूमिपुत्र अवार्ड
अनार रत्न अवार्ड सहित कई सम्मान प्राप्त

बाड़मेर । आर्थिक प्रगति के लिए आजकल लोग व्यापार, उद्योग या सरकारी नौकरी के लिए प्रयासरत हैं। कृषि क्षेत्र को बिल्कुल हाशिए पर रखने का या घाटे का सौदा कम मुनाफे अधिक मेहनत का कार्य मांदने की सोच सभी रखते हैं ।ऐसे समय में कृषि क्षेत्र में ही अपनी मेहनत लगन एवं दूरदर्शिता से लाखों रुपए की आमदनी प्राप्त करने वाले नरपतदान रत्नू अन्य सभी काश्तकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं, जिनके पास पर्याप्त संसाधन होते हुए भी कृषि में इतना मुनाफा नहीं कमा सके।

जैसलमेर जिले के बारठ का गांव के मूल निवासी नरपत सिंह जी के पिता सरकारी सेवा में होने से बालोतरा में बस गए वहीं पर व्यवसाय शुरू कर दिया था प्रारंभ में 1990 से 2008 तक ट्रैवल्स का व्यवसाय था इसके पश्चात उन्होंने ऑटोमोबाइल का व्यवसाय शुरू किया जो अभी भी सुचारू रूप से चल रहा है इसी दौरान उन्होंने पास में गांव माटी में जमीन खरीदी । उसमें अनार की खेती प्रारंभ की इसके पूर्व सरसों, इसबगोल, रायडा, अरंडी, की फसल लेते थे मगर अनार की खेती ज्यादा रास आई। अनार से सालाना 50 लाख से अधिक कमा लेने वाले रत्नू नें अपने यहां दर्जनभर से अधिक व्यक्तियों को रोजगार भी दे रखा है अनार के अलावा नींबू,चीकू, अंजीर, मौसमी, आंवला, बादाम, काजू ,सीताफल के पौधे लगा रखे हैं जिनके सकारात्मक परिणाम सामने आने पर किसानों को अन्य विकल्प भी मिल जाएंगे। अनार के बगीचे में देसी खाद की एवं गोमूत्र की जरूरत होने से 17-18 देसी गोवंश पालन किया हुआ है। गोवंश से गोबर वॉश तैयार किया जाता है जो कि पाइप के जरिए टैंक से आने वाले वर्षा जल को ड्रिप के जरिए अनार के पौधों को तक पहुंचाया जाता है। वहीं गोमूत्र से जैव कीटनाशक तैयार करके इसका उपयोग लेते हैं। ऐसे नवाचारों से उन्नत कृषि करने वाले रत्नू को सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है श्योर संस्थान बाड़मेर कृषि विज्ञान केंद्र बाड़मेर जोधपुर द्वारा अवार्ड से सम्मानित किया। वहीं जयपुर में भूमिपुत्र अवार्ड से सम्मानित किया गया।

चारणत्व मेगज़ीन का विमोचन

(अहमदाबाद, जयपुर, देशनोक, उदयपुर, मुम्बई, चैन्नई, सहित कई जगह वितरण)

अहमदाबाद ।

चारण गढ़वी समाज को प्रगति के शिखर पर ले जाने को संकल्पित cgif की अहमदाबाद में एक अनोपचारिक बैठक आयोजित की गई। शिक्षाविद डॉक्टर हाकमदान चारण के वाईस चांसलर बनने के बाद पहली बार अहमदाबाद पधारने के अवसर पर यह बैठक रखी गई। इस अवसर पर सभी पदाधिकारियों ने समाज के विकास व संगठन के लिए cgif के कार्यों में तेजी लाने की सहमति जताते हुए कई विषयों पर मंथन किया। श्री इन्द्र जीत टापरिया ने बताया कि वरिष्ठ सलाहकार सेवा निवृत्त IAS वी एस गढ़वी साहब की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें महत्वपूर्ण विषयों में पर चर्चा हुई। प्रमुख रूप से–

cgif का ग्लोबल रूप से चारण समाज का डाटा शीघ्रता से एकत्र करना है, ताकि हम हमारे समाज की हर क्षेत्र में स्थिति जान सके। इसी क्रम में राम दान जी, दिलीप सिलगा व बलवंत बाठी ने अहमदाबाद में प्रतियोगिता तैयारी करने वाले छात्रों के लिए रहने की सुविधा करने के लिए छात्रावास की व्यवस्था के लिए एस.के. लांगा साहब से निवेदन किया जिस पर लांगा साहब ने इस प्रोजेक्ट में दिलिप सिलगा को आगे आकर करने का आह्वान किया। इस पर उन्होंने सहमति जताई। अहमदाबाद व गांधीनगर के बीच में उपयुक्त भूमि तलाश कर छात्रावास बनाने का संकल्प लिया।

cgif राजस्थान प्रमुख श्री हाकमदान चारण ने अन्तर्राष्ट्रीय चारण समाज के लिए कार्यरत cgif से पाकिस्तान में बसे 206 चारण परिवार के लिए सहयोग करने का प्रस्ताव रखा। मानवीयता व चारण होने के नाते हमारा दायित्व है कि विश्व में कहीं भी पीड़ित चारण की मदद की जानी चाहिए।

cgif MD राजा रूडाच ने संगठन में रिक्त पदों पर शीघ्र योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति करके cgif के कार्य को गति देने की

बात कही। रविदान मोड ने योग्य व्यक्तियों के चयन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर 114 बार रक्तदान करने वाले भरत भाई का भी सम्मान किया। साथ ही चारण समाज की साहित्यिक सांस्कृतिक विरासत को जन जन तक पहुंचाने एवं कैरियर गाइडेंस, व्यवसाय व्यापार मार्गदर्शन सहित बहुआयामी विषयों पर प्रकाशित प्रथम मेगज़ीन 'चारणत्व' का सभी सदस्यों ने विमोचन किया।

बैठक के समापन पर कलक्टर लांगा साहब ने सभी बिंदुओं पर कार्ययोजना पर कैसे कार्य होगा इस बाबत अपने विचार प्रकट करते हुए सभी पदाधिकारियों को जानकारी दी।

इस अनोपचारिक बैठक में भी सभी सदस्यों ने जिस गंभीरता से समाज के लिए हर पहलू पर चिंतन मनन किया व सबको साथ लेकर चलने की बात कही इससे निश्चित रूप से समाज का हर व्यक्ति cgif से जुड़ने के लिये प्रेरित होगा।

विद्यादान अंशदान में सहभागी बनें

यह सर्वविदित है कि समस्त दान में विद्यादान सर्वश्रेष्ठ है । विद्या अर्जन में अनन्य भाव से जुड़कर समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण में समाज की भूमिका नितांत आवश्यक एवं परम प्रासंगिक है । श्री मेवाड़ चारण महासभा द्वारा विद्यादान कोष की स्थापना की गई है उसका उद्देश्य से श्री भूपाल चारण छात्रावास में शैक्षणिक उन्नयन की दिशा में कार्य करते हुए उन्नत पुस्तकालय की स्थापना, प्रतियोगी परीक्षा के स्वजातिय अभ्यर्थियों के लिए अद्यतन पाठ्य सामग्री की व्यवस्था, 24 घंटे संचालित रहने वाला अध्ययन कक्ष की स्थापना एवं साथ ही अध्ययन के क्षेत्र में समाज की वित्तीय सक्षम भाइयों और बहनों की छात्रवृत्ति के माध्यम से सहायता करना है। विद्यादान कोष में हाल ही में सरकारी सेवा में कार्यरत सजातीय बंधुओं बंधुओं में अंशदान किया है। विद्यादान के माध्यम से आर्थिक अनुदान प्रतियोगिता परीक्षा साहित्य का दान इत्यादि स्वीकार्य है समाज को यह चाहिए कि विद्यादान कोष जैसी अभिनव पहल में जुड़कर समाज के स्थाई सशक्तिकरण की दिशा में योगदान करें विद्यादान कोष में प्राप्त राशि का पूर्ण पारदर्शिता के साथ ब्यौरा रखकर सार्वजनिक किया जाएगा। जिससे कि समाज का आर्थिक सक्षम वर्ग इससे अधिकाधिक जुड़ सकेगा। विद्यादान कोष में आप भी 100 प्रतिमाह इस अभियान के अंतर्गत कार्य को सफल करने में से भागी बन सकते हैं

संपर्क सूत्र–9414149415, 8209913073

YouTube द्वारा राजस्थान की
प्रथम सिल्वर बटन प्राप्त एकल राजस्थानी गायिका

राजस्थानी सुरों की पर्याय बनी अनुप्रिया लखावत

''प्रत्येक व्यक्ति की सफलता के पीछे महिला का हाथ होता है'' यह बात हमने अक्सर सुनी है मगर ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं जहां महिला की सफलता, लोकप्रियता के पीछे व्यक्ति का हाथ होता है हम बात कर रहे हैं इन दिनों राजस्थानी संगीत की जानी पहचानी शख्सियत प्रसिद्ध गायिका अनुप्रिया लखावत के बारे में, जिनको विवाह के बाद उनके पति नागेश्वर लखावत ने अपने हुनर से दुनिया के समक्ष लाने के लिये प्रेरित किया। (अनुप्रिया लखावत के माता पिता पाली जिले के नौख गांव की श्रीमती प्रकाश कंवर (वरिष्ठ अध्यापिका) जीवन सिंह कविया (बीएसएनल) में कार्यरत है।)

अनुप्रिया के भाई यशपाल कविया आई.आई.एम. में अध्ययनरत है। अनुप्रिया की शिक्षा मुख्यतः पाली से हुई। इन्होंने पाली के बांगड़ महाविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य से M.A- B.ed. किया है। बचपन से ही इनका संगीत व गायन में विशेष रुझान था जिसके चलते इन्होंने विद्यालय, महाविद्यालय स्तर पर कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं कई मेडल जीतें। सामाजिक रिवाज एवं अनुशासन के चलते परिवार वालों ने शिक्षा को प्राथमिकता दी एवं संगीत इनके जीवन में पीछे छूट गया। इनका विवाह पाली के रेंदडी गांव के श्री सत्यदेव लखावत के सुपुत्र श्री नागेश्वर लखावत से हुआ जो वर्तमान में टेफे मोटर्स में एचआर मैनेजर के पद पर कार्यरत है । विवाह के पश्चात इनके पति ने इन्हें अपनी अभिरुचियों को निखारने हेतु प्रेरित किया। तब इन्होंने प्रथम बार टेफे मोटर्स के वार्षिक दिवस पर 2017 में अपने गायन की प्रस्तुति दी जिसे सभी ने सराहा। इसके पश्चात इनका आत्मविश्वास बढ़ गया। इन्होंने अपने पति की प्रेरणा से ही संगीत को आगे बढ़ाने का मानस बनाया। अपने पति को अपनी प्रेरणा का सबसे बड़ा स्त्रोत मानते हुए अनुप्रिया लखावत ने जयपुर के ही संगीत निर्देशक कपिल जांगिड़ के साथ मिलकर राजस्थानी संगीत को व लोकगीतों को एक नया रूप दिया। यूट्यूब पर आज इन के गानों पर 36 मिलियन से ज्यादा व्यूज़ है। इनके स्वयं के यूट्यूब चैनल पर सवा लाख से ज्यादा सब्सक्राइबर्स है वहीं इनका चैनल राजस्थान का प्रथम एक कलाकार सिल्वर बटन प्राप्त यूट्यूब चैनल है। निकट भविष्य में उनके 3–4 गीत और आने वाले है जिनकी शूटिंग अलवर में की गई है।

अनुप्रिया द्वारा गाए हुए गीतों में **पिया आओ, बीरो बिणजारो, छोटी सी उमर, जल्ला, आवे हिचकी** आदि कर्ण प्रिय गीत प्रमुख है । अनुप्रिया लखावत का अपने समाज की बहन बेटियों को यही संदेश है कि अपने सपनों को कभी अपने मन में मत रखो उनको पूरा करने का निरंतर प्रयास करो। सपने देखने का हक सभी को है चाहे वह बेटा हो या बेटी अपने सपनों को सार्थक कर आप आत्मनिर्भर बन सकते हो जो कि आज के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के लिए अति आवश्यक हैं। उनका समाज के पुरुषों को यह संदेश है कि पत्नी को परिवार व बच्चों की देखभाल का निमित्त मात्र ही ना समझें, उसके सपनों का सम्मान करें। उन्हें आगे लाने में, उनकी प्रतिभाओं को निखारने में उनकी सहायता करें तो समाज को अनेक महिला प्रतिभाएँ मिलेगी जिसकी आज हमारे समाज को आवश्यकता है।

संकलन – देवराज सिंह , राबचा

अमावस की रात का दीपक

चारण अस्तित्व सेवा संस्था

भोगवाद और पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण की दौड में भारत की समस्त जातीयां अपना अस्तित्व खोने लगी है , त्याग और अध्यात्म का प्रतीक हमारा चारण समाज भी इससे अछुता नही रहा है । वर्तमान समय में जितने भी समाज सेवी संगठन है केवल भौतिक ढांचे को सुधारने में लगे है जड़ो के स्थान पर पत्तो को खाद–पानी दे रहे है

चुंकि देविय गुणो से युक्त चारण समाज के युवा चिंतनशील है और समाज में निरंतर हो रहे नैतिक पतन से व्यथित है , ऐसे ही कुछ व्यथित हृदय के युवाओ ने चारण अस्तित्व को बनाये रखने और समृद्ध बनाने हेतू प्रण लिया और इस दिशा में निम्नलिखित कार्य किए ———

1. 2016 जुलाई – अगस्त में मैंने एक व्हाट्सएप समूह बनाया गया , समूह में जुडने के लिए एक शपथ पत्र तैयार किया गया तथा व्यापक प्रचार प्रसार किया जिसके फलस्वरुप कई युवाओ ने शपथ पत्र भरकर समूह से जुडने में रुचि दिखाई ।

2. नवम्बर 2016 को देशनोक में प्रथम बैठक बुलाई गयी , जिसमें संस्था पंजीकरण करके समाज हित में कार्य करने का निर्णय लिया गया ।

3. 2017 में भादरेस निवासी अक्षयदान जी ने अपनी 2 पुत्रीयों के विवाह को बिना दहेज और नशे के संपन्न करवाया , अतः संस्था सदस्यों ने भादरेस जाकर अक्षय दान जी को साधुवाद प्रदान किया ।

4. संस्था की दूसरी बैठक आबुपर्वत पर रखी गयी , जहां से संस्था पंजीकरण की कार्यवाही प्रारंभ हुई ।

5. तीसरी बैठक देशनोक में ओरण परिक्रमा के अवसर पर रखी गयी संस्था से सम्बंधित सारी पत्रावलियाँ तैयार की गयी ।

6. रजिस्ट्रार कार्यालय सिरोही में ऑनलाइन आवेदन किया गया जहां चारण रत्न भवानीसिंह जी कविया साहब रजिस्ट्रार पद पर ट्रांसफर होकर आए ही थे अतः अविलम्ब ही बिना किसी समस्या के कविया साहब के हस्ताक्षर से 'चारण अस्तित्व सेवा संस्था' का पंजीकरण हो गया ।

7. संस्था सदस्यों ने सिरोही जाकर कविया साहब को स्मृति चिह्न भेंट कर आभार व्यक्त किया तथा कविया साहब ने प्रेरणादायी वचनो से सबका मनोबल बढाया ।

संस्था पंजीकरण हो चुका है , अब शीघ्र ही कार्य भी प्रारंभ हो जाएगा । संस्था को समाज के विद्वान मान्यवरों की शुभाशीष प्राप्त है , सिंहथल निवासी पर्वत भाभा, डॉ. शंकरदान जी देशनोक ,सज्जन सा गढवी कच्छ, जयसिंह जी निम्बाज और सांतनू भाई गढवी कच्छ और वैणीदानजी निम्बाज आदि का मार्गदर्शन प्राप्त है ।

चारण अस्तित्व सेवा संस्थान की बैठक सिरोही चारण छात्रावास में संस्थान के कार्यकर्ताओं एवं समाज के गणमान्य बंधुओं की उपस्थिति में संपन्न हुई । मीटिंग की पूर्व संध्या पर कार्यकर्ता एकत्र हुए जिसमें मुंबई से संतोष सिंह, सूर्यवीर सिंह पेशुआ बाड़मेर से महिपाल सिंह निमाज से जय सिंह जी जोधपुर से महेंद्र सिंह उदयपुर से चारणत्व मेगजीन के संपादक महेंद्र सिंह चारण, दशरथ आर्य, शंभु सिंह पाली, प्रदीप सिंह लखावत(**DSP**) हितेन्द्र सिंह पुरावा, अजीत सिंह बाघावास,अजीत सिंह साता, महावीर सिंह खोखरा, राजवीर सिंह सिरोही, मोहित सिंह प्रतापगढ़,मुकेश सिंह जालोर, मूलदान सिंह बाड़मेर, महिपाल सिंह बाटी सहित सभी ने एकत्र होकर मीटिंग में कुछ ठोस कार्य के निर्णय लेना तय किया। दूसरे दिन सुबह सिरोही चारण समाज के अध्यक्ष श्री राजेंद्र सिंह जी आढ़ा की अध्यक्षता में मातेश्वरी के समक्ष दीप प्रज्वलन,वआरती गायन करके बैठक की शुरुआत की गई। ।संचालन करते हुए श्री शूरवीर सिंह आढ़ा ने पहले परिचय सत्र प्रारंभ किया जिसमें सभी कार्यकर्ताओं एवं अतिथियों ने अपना परिचय दिया इसके बाद वर्तमान परिस्थिति में कुछ अलग हटकर कार्य करने के विषय में संस्था में प्रस्ताव लिया। समाज में एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया। आधुनिकता के चलते संस्कृति को बचाने के लिए संस्कार शिविर लगाने का निर्णय लिया गया इसमें सर्वप्रथम संस्थान के स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण लेने एवं बाद में बालकों को प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव लिया । इस हेतु चारण समाज की संस्कृति एवं आचार विचार से युक्त एक पुस्तक प्रकाशन का प्रस्ताव भी लिया गया जिसमें वरिष्ठ विद्वानों से मार्गदर्शन लेकर उचित पाठ्यक्रम तैयार करके उसके अनुरूप संस्कार शिविर का प्रारंभ करना तय किया गया। शिविर में सभी कार्यकर्ताओं ने अपने अपने विचार प्रकट किए एवं संस्था द्वारा धरातलीय कार्य करने पर एकमत प्रस्ताव रखा गया ।

आपका अपना
रणजीत सिंह चारण ''रणदेव'' (सचिव)
चारण अस्तित्व सेवा संगठन (CASS)
https://www.facebook.com/ **चारण अस्तित्व सेवा संगठन**
Info@charanastitvasevasanstha
Mob.: 7300174927

मेवाड़ में शिक्षा का गौरवशाली इतिहास एवं कविराजा श्यामलदास के प्रयास

कविराजा जी की सत्यता स्पष्टता और राज भक्ति ने महाराणा सज्जन सिंह जी को इतना प्रभावित किया कि वे राजपूत जाति और राजपूत राज्यों के लिए समस्त चारण जाति को ही ईश्वरीय देन समझने लगे ,उनके एतिहासिक अनुशीलन ने ह्रदय पर यह अमित मुद्रा लगा दी कि यदि राजपूत जाति के पतन को रोकना हो तो पहले चारणो को सुशिक्षित करना चाहिए। इसी विश्वास और संस्कार के कारण चारण बालकों को पढ़ाने के लिए महाराणा सज्जन सिंह जी ने कविराजा की प्रार्थना पर 100 की उदयपुर में चारण पाठशाला के नाम से मदरसा बनवाकर उसमें चारणों के लड़कों की पढ़ाई में खर्च किए जाने का आदेश दिया तदनुसार संवत 1937 में पाठशाला और छात्रालय कायम हुआ। उसमें छः मास्टर जिनमें पृथ्वीराज चरित्र नामक ग्रंथ के कर्ता स्वर्गीय राम नारायण जी दुग्गड भी एक थे। पाठशाला एवं मास्टर व छात्रालय अन्य नौकरों का वेतन पठन पाठन की समस्त सामग्री, छात्रों का भोजन, वस्त्र आदि समस्त खर्च, राज्य से दिया जाने लगा और जब तक पाठशाला एवं छात्रावास का स्वतंत्र भवन न बन जाए तब तक यथा आवश्यकता बड़े उमराव सरदार आदि कि उदयपुर की हवलियों से काम लिया जाता रहा। सबसे पहले सौदा बारहठ के गांव राबछा के बारहठ पहाड़ जी की हवेली में इसका श्री गणेश हुआ।

जहां महाराणा साहब की इच्छा होती है वहां चारण छात्रों सहित एक सभा होती है जिसमें उदयपुर के साहित्य रसज्ञ ठाकुर मनोहर सिंह डोडिया(सरदारगढ़) आदि बड़े उमराव एवं कवि श्रेष्ठ स्वामी गणेशपुरी जी डिंगल के प्रतिनिधि महियारिया मोड़ सिंह जी, विद्वद्वर उज्जवल फतह कर्ण जी और शहर के अन्य कविगण भी शामिल होते। सभापतित्व का आशन स्वयं महाराणा साहब ग्रहण करते और रस अलंकारों की छानबीन में भाग लेते हुए निज कविता भी फरमाते।सब छात्रों को भोजनोत्तर माला आदि प्रदान की तब जाकर सभा विसर्जन होती यह सिलसिला तीन–चार साल तक चलता रहा।

उस समय एक सौ से अधिक चारण छात्र एकत्रित हो चुके थे क्योंकि बालकों को जुटाने का काम कविराजाजी पर था। यह दिन चारण जाति के लिए अहो भाग्य के थे परंतु ईश्वर की सृष्टि में उलूक स्वभाव के आदमी भी होते थे। इतनी सुविधा हो होने के बावजूद पाषाण जीवन अनेक चारण अपने बालकों को उदयपुर नहीं भेजते थे। विवश होकर कविराजाजी जिला हाकीमों द्वारा पुलिस व जागिरी सवार भेजकर लड़कों को पकड़वा मंगाते। उस समय का दृश्य दुख और करुणा से भरा हुआ था। दुख था चारणो की मूर्खता पर, करुणा थी बालकों की रूदनध्वनि को शत गुणित करने वाले घर के भीतर माता भुआ, बहन आदि और बाहर पिता–भाई दादा आदि के मूढ़ कंदन पर। बालक का एक हाथ होता सवार के हाथ में और दूसरा होता बाप आदि के हाथ में इस खींच–तान में ग्रामीणों की सहस्त्रों गालियां पड़ती, कभी राजा जी के नाम पर, उनके घर और वंश पर आग रखी जाती और 'रोम–रोम में कीड़े पड़े' यह कहा जाता। इस हाय तोबा का शोर ग्राम वासियों को इकट्ठा कर लेता परंतु सवार राज का है और लड़का भी पकड़ा जाता है पढ़ाने के लिए आता है कोई क्या करता इनमें कुछ स्वयं की बुद्धि पर अभिमान वाले भी थे जिन्होंने अपने लड़कों को दूसरे राज्यों में अपने संबंधियों के यहां भेज देने की चतुराई की थी ।

शिक्षा के इस प्रयास को स्थाई रूप देने के लिए कभी राजा जी ने पाठशाला बनाने का निश्चय किया चारण पाठशाला एवं छात्रावास बनाकर इसे स्वावलंबी संस्थान बनाने का प्रबंध करने के लिए महाराणा सज्जन सिंह ने फरमाया, मैं चाहता हूं कि जयपुर, जोधपुर आदि के राजा भी ऐसा ही करें। इस विचार के अनुसार यह तय हुआ कि पाठशाला और छात्रालय के स्वतंत्र मकान बनाए जाएं इसके लिए महाराणा साहब ने अपने प्रिय सज्जन निवास नामक बाग जो शहर से मिला हुआ है 5:30 बिघा के करीब जमीन माफी में प्रदान की जिसमें एक विपुल जल बावड़ी भी थी । साथ ही फरमाया कि इस मकान के लिए मेवाड़ के उमराव सरदारों से चंदा इकट्ठा करो जितना चंदा इकट्ठा करोगे उतने ही रुपए राज्य से दिए जाएंगे, किंतु मकान के लिए एक लाख से कम रुपए ना हो। कविराजा जी को किसी से कुछ मांगने की चिढ़ सी थी परन्तु जाति सेवा के लिए चंदा मांगना स्वीकार किया। उनके समझाने और प्रभाव की खूबी से बड़े उमराव सरदारों जाति हितैषीयों ने उत्साह और उदारता से अच्छा चंदा दिया और थोड़े ही समय में करीब 40000 रुपये इकट्ठे हो गए और पाठशाला का निर्माण प्रारंभ हो गया

1941 के चैत्र में जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह जी और कृष्णगढ़ के महाराजा सादुल सिंह जी उदयपुर में मेहमान हो कर आए तब महाराणा ने दोनों अतिथि नरेशों के साथ पाठशाला का प्रारंभिक निर्माण देखने गए। वहां उन्होंने जोधपुर महाराजा से कहा कि यह मकान तैयार हो जाने पर मैं आपको फिर उदयपुर बुला लूंगा और इसका उद्घाटन आपके हाथ से होगा। इसी प्रकार आप भी जोधपुर में चारण पाठशाला निर्माण कराएं मैं इसका उद्घाटन करूंगा। महाराजा ने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार किया। किंतु चारण जाति ! तेहि नो दिवसा गताः महाराणा सज्जन सिंह जी का असामयिक स्वर्गवास हो जाने के कारण 39000 में से ही 30000 लगाकर जितना बन सका उतना पाठशाला भवन खड़ा करवा दिया और शैष बैंक में रखवा दिए।

शिक्षा के लिए एक बार वह मधुर स्वप्न टूट गया। जमा–जमाया मंडप छिन्न भिन्न हो गया इधर तो चारण जाति के लिए शॉप मूर्ति अज्ञानी माता पिता मौका पाकर अपने लड़कों को भगा ले गए उधर कुछ ईर्ष्यालू सरदारों ने बहका कर पाठशाला के लिए रकम देना बंद करवा दिया । परिणाम पक्षी उड़ गए और सुखा सरोवर रह गया।

परंतु विद्या के महत्व पर मुग्ध कविराजा अपनी संतान को पठन–पाठन से वंचित कैसे रखते 10 रू.मासिक कविराज जी ने 10रू. मासिक बारहट कृष्ण सिंह जी ने और 10रू. मासिक खेमपुर ठाकुर चमन सिंह जी ने घर से देना तय करके 30रू. मासिक तनख्वाह पर काशी से दक्षिण ब्राह्मण पंडित गोपीनाथ शास्त्री को बुलाकर 6 बालक कविराजा के दत्तक पुत्र यशकर्ण जी, बारहठ कृष्ण सिंह जी के पुत्र केसरी सिंह और किशोर सिंह जी, ठाकुर चमन सिंह जी के पुत्र करणी दान जी और भैरव सिंह जी और कविराजा जी के साडु के पुत्र चाळक दान जी को अध्ययन के लिए सुपुर्द किया।यह स्थिति कविराजा साहब के बारहठ कृष्ण सिंह जी को संतोष प्रद न थी अतः आखिर उन्होंने महाराणा फतेह सिंह जी से अर्ज की कि हमारे लड़कों को तो हम अपने घर से पढ़ा लेंगे ।

शेष पृष्ठ 42 पर

श्री मेवाड़ चारण संस्थान के अध्यक्ष श्री भैरू सिंह सोदा ने कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में पारित हुए प्रस्तावों की क्रियान्विति पर बल देते हुए श्री भूपाल चारण छात्रावास उदयपुर में शैक्षणिक वातावरण को प्रगतिशील बनाने पर बल दिया। संस्थान की अपेक्षा की दिशा में कार्य करते हुए श्री प्रतापसिंह बारहठ सभागार में समाज के प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे बालक बालिकाओं हेतु निशुल्क मार्गदर्शन एवं अध्यापन का उपक्रम आरंभ किया गया है। समाज का सशक्तिकरण सही मायनों में अधिकाधिक सजातीय बंधुओं भगिनियों का शैक्षणिक उन्नयन कर रोजगार (जिसमें सरकारी सेवाएं प्रथम वरीयता है) से जोड़ना समय की मांग है । संस्थान के उपाध्यक्ष एवं निशुल्क कोचिंग कक्षाओं के संचालक वीरभद्र सिंह बारहठ ने अनुभवी मार्ग दर्शकों की टीम गठित कर इस कार्य को परिणित किया है। इस भागीरथी कार्य में श्री प्रहलाद सिंह सोदा (बीकाखेड़ा) द्वारा अंग्रेजी अर्थशास्त्र के द्वारा विज्ञान एवं गणित के साथ ही विशेष मार्गदर्शन कक्षाओं में डॉ नरेंद्र सिंह देवल श्री नरेंद्र सिंह देवलतें श्री श्याम प्रताप सिंह महिया तें श्री सुभाष सिंह सांदूतें द्वारा भी साप्ताहिक आधार पर मार्गदर्शन दिया जा रहा है। संचालक वीरभद्र सिंह बारहठ द्वारा इतिहास राजस्थान कला संस्कृति सभ्यता विषयों पर अध्यापन किया जा रहा है निशुल्क कक्षाओं में राजस्थान लोक सेवा आयोग प्रायोज्य द्वितीय व तृतीय श्रेणी अध्यापक पदों के लिए सारगर्भित अध्यापन की समुचित व्यवस्था की गई है। संस्थान समाज से अपील करता है कि इस प्रकार के नवाचार युक्त एवं समय आपेक्षित कार्यक्रम में योगदान दें ताकि यह प्रवृत्ति अधिक अधिक उत्पादक एवं सफल हो सके।

महामंत्री श्री दशरथ सिंह जी बेलारा द्वारा 1 लाख का फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। श्री गिरिराज सिंह राबचा ने बताया कि नरुजी बारहठ विंग का निर्माण शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा।

वीरभद्र सिंह बारहठ

समाज के वायु सेना कार्मिकों पूर्व कार्मिकों का पारिवारिक स्नेह मिलन

जोधपुर। अखिल भारतीय चारण, गढवी समाज के वायु सेना कार्मिकों, पूर्व कार्मिकों का पारिवारिक स्नेह मिलन का ऐतिहासिक आयोजन विगत 17 नवम्बर 2018 को जोधपुर स्थित होटल बरनैला ईन्न में समपन्न हुआ। विगत दो–तीन वर्षों से इस संदर्भ के विचार चल रहे थे कि वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्नेहमिलन एक मात्र माध्यम है जिसके द्वारा हम एक दूसरे से जुड़े रह सकते हैं तथा सभी एक दूसरे को जान सकते हैं । सर्वप्रथम कार्यक्रम की तिथि सर्व सहमति से निर्धारित करके 21 अक्टूबर को औपचारिक घोषणा तथा पोस्टर विमोचन किया गया । समाज के लगभग डेढ़ सौ वायु सेना कर्मी देश की इस प्रतिष्ठित सेवा से जुड़े हुए हैं तथा पूरे हिंदुस्तान के अलग–अलग जगह पर सेवाएं दे रहे हैं इसके बाद आयोजन समिति में ऋषि राज सिंह,जयदीप सिंह, जितेंद्र सिंह नरेंद्र सिंह, गिरधारी सिंह इत्यादि बंधुओं ने जानकारी जूटा कर पूर्व कार्मिकों से संपर्क किया तथा उनको इस आयोजन हेतु आमंत्रित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ पूर्व कार्मिकों श्रीमान चक्रवर्ती जोरावर सिंह जी, रिड़मल दान जीसा तखतगढ., लक्ष्मी दान जी बागुंडी ने की। इन वरिष्ठ पूर्व कार्मिकों सहीत कई बंधुओं ने शिरकत की। श्री गणेश भगवान तथा सरस्वती वंदना के साथ आयोजन शुरू किया गया। संचालक सुरेन्द्र लालस ने बताया की कार्यक्रम में पूर्व कार्मिकों समेत लगभग 150 स्वजातीय स्नेही बन्धुवरों व परिवारों ने शिरकत की उनके द्वारा जीवन के विभिन्न अनुभवों को साझा किया गया। कार्यक्रम में पधारे पूर्व कार्मिकों में कई बैंक कर्मी , प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस,आईबी, उच्च शिक्षा मैनेजमेंट, कॉरपोरेट, लीगल सेक्टर इत्यादि विभिन्न विभागों में कार्यरत कार्मिकों ने शिरकत की। उनके द्वारा वर्तमान कार्मिकों का मार्गदर्शन किया गया तथा जैसा कि कार्यक्रम की मूल रूपरेखा में था वर्तमान कर्मियों द्वारा पूर्व कार्मिकों का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में श्री हाकम दान जी कुलपति बीकानेर तकनीकी विश्वविधालय विशेष आमत्रित सदस्य थे ।तत्पश्चात जोधाणा वायु कर्मीयों द्वारा मंचासिन सदस्यों का अभिनंदन माल्यार्पण करके, साफा पहनाकर स्वागत किया गया। पुर्व कार्मिकों की तरफ से गजे सिंह जी मथानिया ने धन्यवाद दिया। परिचय सत्र में पधारे हुए पूर्व कार्मिकों ने पहले अपना परिचय व संक्षिप्त मार्गदर्शन दिया। तत्पश्चात प्रत्येक व्यक्ति को कार्यक्रम द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। फिर कार्यक्रम में माता जी की चिरजाओं का दौर चला जिसमें गणेश वंदना करणी माता की चिरजा का अमृत पान सभी बंधुओं ने किया। आयोजन में अनौपचारिक रूप से एक दूसरे से बातचीत और आपसी परिचय से मिलकर सभी आगंतुक बेहद प्रशन्न हुए, इसीसे कार्यक्रम की मूल भावना का पोषण हुआ। चकृवृती सिंह जी टेहला ने पधारे हुए बन्धुओं का धन्यवाद दिया।

कुलपती हाकमदान जी ने जोधाणा परिवार की तरफ से बाहर से पधारे हुए समस्त स्वजनों को स्मृति चिन्ह देकर आभार प्रकट किया। उसके बाद आपने चारण गढवी अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संघठन के बारे में भी जानकारी दी। अंत मे विंग कमान्डर लक्षमणसा चांचलवा ने वेब कार्स्टिग से आभार प्रकट कर सुरेन्द्रजी तथा टीम को इतीहासिक सफल आयोजन की बधाई दी, सभी का आभार प्रकट किया। सभी पधारे हुए बन्धुओं के लिये साथ में स्वरुचि भोजन की भी व्यवस्था की गयी थी।

मालासी में माँ भगवती का विशाल जागरण एवं प्रसादी

माँ करणी के कार्यक्रम के अनुसार 21 नवम्बर को ओमपाल सिंह खिड़िया के नेतृत्व में मालासी में शक्ति स्वरूपा पूज्य प्रकाश बाई सा के पावन सान्निध्य में माँ भगवती का विशाल जागरण एवम् प्रसादी का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय चारण महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री लक्ष्मण सिंह जी किनियां (मनरूपजी का बास) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में महान पदयात्री और देशनोक ओरण परिक्रमा के प्रवर्तक तथा अखिल भारतीय चारण महासभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉक्टर गुलाबसिंहजी जागावत (बल्लूपुरा–अलवर) का पदार्पण भी कार्यक्रम की विशिष्ट उपलब्धियों में शामिल रहा ।

इस अवसर पर चारण महासभा दिल्ली के अध्यक्ष श्री सुमेरदानजी खिडिया (इन्द्रपुरा) तथा चारण अस्तित्व सेवा संगठन के श्री महीपाल दान जी तरला व श्री हितसिंहजी पुरावा की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही ।

अन्य विशिष्ट अतिथियों में कुलदीप सिंह जी पालावत (खटून्दरा) गोविन्द सिंह जी चाम्पावत (ओडींट) तथा मनोज सिंह जी देपावत देशनोक प्रमुख थे।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में राजस्थान के प्रसिद्ध चिरजा गायकों ने बेहतरीन चिरजाएं प्रस्तुत कीं ।श्री कल्याणसिंहजी पालावत (खारिया बास – सीकर) श्री दुर्गादानजी देपावत (देशनोक) नेहा जी अमरावत (उदयपुर) सुमनजी देपावत (देशनोक) श्री सोहनदान खिडिया (मालासी) श्री शंकरदानजी सांदू (बीकानेर) श्री रामप्रताप जी (चारणवासी) तथा नौनीहाल सूर्यदेव सिंह खिड़िया (देराजसर) प्रमुख थे ।

शुरुआत में शक्ति स्वरूपा प्रकाशबाई सा का गाँव की सीमा पर बने स्वागत द्वार पर पुष्पवर्षा करके सत्कार किया गया ; तत्पश्चात उन्हें बग्घी में बैठाकर आयोजन स्थल तक लाया गया शोभायात्रा के पूरे रास्ते में श्री डूँगरगढ के प्रसिद्ध न्यू भारत बैण्ड द्वारा बजायी गयी चिरजाओं की धुन और गायक हमीद भाई द्वारा चिरजा गायन से एक अलग ही समां बँधा जिसे शब्दों में बाँध पाना लगभग असम्भव है !!

बाईसा महाराज सर्वप्रथम मोडरिया भैंरूनाथ एवम् चाळरायजी के मन्दिर पधारे वहां दर्शन करने के बाद आप श्री करणी मन्दिर पधारे और वहां जोत आरती की ।

इसके बाद बाईसा महाराज मंच पर बिराजे जहाँ मन्दिर के व्यवस्थापक ठाकुर बैरीसालदानजी ने सपत्नीक उनका स्वागत किया ।

जिन कार्यकर्ताओं ने अतिथियों और मेहमान गायकों का स्वागत किया उनमें बुजुर्गों में किशौरदानजी , बहादुर सिंह जी ,शुभदानजी, शक्तिदानजी, दीपदानजी,हनुमानदानजी, जसदानजी, नरसीदानजी, शंकरदानजी, शेरदानजी, गुलाबदानजी,और प्रभुदानजी ने तथा युवा पीढी की तरफ से ओमपाल सिंह ('संयोजक') राजूदान, महेन्द्र सिंह, डूंगरदान, प्रमोद, ओमप्रकाश, रघुवीरसिंह, कान्हदान(तीनों), नरपत (दोनों), गोविन्द (पुजारी), नीरज,बंशी, ईश्वर दान, सोनू (कवि), बजरंग, भवानीसिंह, पाबूदान, प्रकाश, कैलाश, मनोज, बिहारी दान, चतरसिंह,उम्मेद(दोनों) तथा नारायण दान ने माला पहनाकर, साफा पहनाकर व माँ करणी की तस्वीर भेट कर स्वागत किया ।

सरकारी एवं गैर सरकारी
मेडिकल बिलबनवाने एवं
जानकारी हेतु संपर्क करें
नरेन्द्र सिंह बोक्सा (छातोल) 9928736251

कॉर्पोरेट क्षेत्र में अनन्त संभावनाएं .....

सरकारी क्षेत्र में सीमित अवसर होने से युवाओं को मेहनत के दम पर निजी क्षेत्र में ऊंचाईयाँ हांसिल करनी चाहिए।

–डॉ. जगदीश आढा

आज हर एक उच्च शिक्षा प्राप्त युवा सिर्फ राजकीय सेवा में जाना चाहता हैं, जबकि मेहनत के दम पर निजी क्षेत्र में , व्यवसाय में अनेक संभावनाएं हैं – यह कहना है डॉ जगदीश आढ़ा का, जिन्होंने पोस्ट ग्रेजुएट होकर एक वर्ष गेस्ट फैकल्टी लेक्चरर पद पर रहकर व्यवसाय क्षेत्र में नाम कमाया है।

हमारे समाज में अक्सर देखा जाता है कि युवा सिर्फ सरकारी नौकरी के पीछे दौड़ता है जबकि इसमें अवसर कम होते हैं और फिर समय के साथ युवा नौकरी नहीं मिलने पर निराश हो जाते हैं। सरकारी क्षेत्र में दिन प्रतिदिन प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है ऐसे में युवाओं को व्यवसाय उद्योग की तरफ ध्यान देकर इस क्षेत्र में भी आगे आना चाहिए। प्रत्येक अंक में एक सफल व्यवसायी के अनुभव एवं परिचय की श्रृंखला में इस बार श्री जगदीश आढ़ा का परिचय पाठकों के समक्ष है

डॉक्टर जगदीश ने गंगापुर भीलवाड़ा से प्रथम श्रेणी से स्नातक किया आप वहां से दो बार ऑल इंडिया प्लेयर भी रहे और 1999 में एनएसयूआई से प्रेसिडेंट का इलेक्शन जीता। आपने उदयपुर से इतिहास में पोस्ट ग्रैजुएट प्रथम श्रेणी से किया एवं बीएड और एमबीए भी कर आपने 1 साल तक गेस्ट फैकल्टी लेक्चरर रहने के बाद व्यवसाय के क्षेत्र में अपना भाग्य आजमाया एवं हर क्षेत्र में प्रगति। की। 2002 से 2005 तक सरस्वती ग्रुप में मैनेजिंग डायरेक्टर वर्क किया और फिर पूरा समय बिजनेस में आ गए। आपने निजी क्षेत्र में दो नर्सिंग होम चलाएं बाद में सरस्वती क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड, सरस्वती जनरल हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड, सरस्वती ऑटोमोबाइल ,साईनाथ फर्नीचर, सरस्वती रेडीमेड गारमेंट, सरस्वती गेस्ट हाऊस, व पिंडवाड़ा में एक कमर्शियल कॉम्प्लेक्स का निर्माण किया। वर्तमान में आपके द्वारा संचालित कंपनी सरस्वती संजीवनी हर्बल हेल्थ केयर और जयराज आयुर्वेदा दोनों हर्बल प्रोडक्ट पांच राज्यों में धूम मचा रही है।

समाज प्रेमी और खेलों के शौकीन जगदीश आढ़ा का हेड ऑफिस नोएडा और रिजनल ऑफिस उदयपुर में है। आपने अपने जीवन में सफलता का पूर्ण श्रेय अपने पिताजी सेवानिवृत्ति आर्मी मेन बालू सिंह जी आढ़ा और अपने जिजोसा अशोक जी गढ़वी साहब को देते हैं। खेल और पॉलिटिक्स में रुचि रखने वाले आढ़ा एन.एस.यु आई और यूथ कांग्रेस में कई पदों पर अपनी पहचान बना चुके हैं।

Dr. Jagdish Adha
Managing Director
+91 94140 62645, 70148 77185

Jairaj

Jairaj Ayurveda

जयपुर। हाल ही के दिनों में ऐसे उदाहरण सामने प्रस्तुत किए हैं जिन से समाज में बदलाव आने की आहट सुनाई दी जोधपुर में श्री पुष्पेंद्रसिंह जी जुगतावत ने अपने पुत्र दिव्यव्रत सिंह की शादी बगैर किसी तिलक दहेज एवं दिखावे के की है। इसी प्रकार सरदार सिंह सांदू के पुत्र हर्ष बना जिनका हाल ही में दिल्ली में व्याख्याता पद पर चयन हुआ उन्होंने अपने पुत्र की बिना तिलक दहेज रिश्ता तय किया। दोनों परिवार सुयोग्य संपन्न है। इन्हें लाखों का तिलक दहेज सहज रूप से मिल सकता था परन्तु आपने इसका निषेध करके समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया।

एक और बहुचर्चित अनोखी शादी ने चारों और बहुत शिक्षा प्राप्त की है जी हां चारण समाज के सीकर जिले में सुंदरपुरा गांव के लक्ष्मण सिंह संधू के पुत्र दीपक भारत और वैदेही की शादी एक नया उदाहरण बन कर सामने आई है। तड़क भड़क चकाचौंध अनावश्यक खर्चे व दिखावे की अंधी दौड़ में दीपक बारैठ ने एकदम साधारण एवं सादगी से शादी संपन्न की। उन्होंने सगाई के वक्त ही परिजनों को बता दिया था कि वह बिना किसी लोभ, दिखावे एवं तामझाम के शादी करेंगे यानी शादी में न तो बारात लेकर लड़कियों के घर गए ना ही इन्होंने दहेज लिया बस परिवार के कुछ लोगों की उपस्थिति में सात फेरे लेकर दुल्हन को घर लेकर आ गए। साथ ही शादी में अनाथ बच्चों को बाराती बनाया। यह बच्चे रंग बिरंगी पोशाक में साफे बांधे हुए थे। इन बच्चों की उपस्थिति में ही दीपक और वैदेही ने सात फेरे लिए इस दौरान कलेक्टर नरेश कुमार ठकराल भी वर वधू को आशीर्वाद देने के लिए पहुंचे और दीपक की ओर से बारात में निराश्रित आश्रम के बच्चों को बुलाए जाने को सराहनीय कार्य बताया। दीपक की बारात किशनपुरा जयपुर निवासी बृजराज सिंह पालावत के घर में पहुंची। दूसरी गाड़ी में अनाथ आश्रम के बच्चों को बारातियों के रूप में सबका स्वागत किया गया । शादी में बैंड बाजे और तामझाम कुछ भी नहीं था। लेकिन अनाथ आश्रम से बच्चों के लिए विशेष रूप से साउंड लगाया गया था बच्चों ने इस दौरान जमकर नृत्य का आनंद लिया व विशेष व्यंजनों का लुत्फ उठाया। दीपक के इस अनुठे नवाचार की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है व सीकर चारण समाज द्वारा दीपक को सम्मानित किया गया। आशा है समाज में इस बदलाव का अनुसरण होगा,व फिजूलखर्ची कम होगी।

पाठकपीठ

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री महेन्द्र सिंह भादा जैसे साहित्य प्रेमी व अनुभवी संम्पादक द्वारा चारण समाज मे साहित्यिक व सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से **'चारणत्व मैग्जीन'** का प्रकाशन शुरु किया। जो कि आज के बदलते परिवेश मे युवाओ को अपनी सभ्यता व संस्कृति को जानने व समझने में अहम भूमिका निभायेगी। साथ ही चारण समाज कि देवियों–शक्तियों, सन्तो व महापुरुषों कि जयन्ति व जीवन के बारे मे जानकारी से समाज लाभान्वित होगा ।

मैं चारणत्व के प्रकाशन पर आपको बधाई देता हूँ तथा माँ करणी जी आपको इस पुनित कार्य में सफलता दे ऐसी शुभकामनाएं करता हूँ।

मुकन दान चारण
सचिव व संस्थापक
रेलवे चारण विकास परिषद्, जोधपुर

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की चारणत्व पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इससे भी बड़ी प्रसन्नता की बात है कि उसमें सब की राय ली जा रही है अपने मन से कुछ भी लिखना और सब के मन की बात जानकर लिखने में बहुत अंतर है और यह काम चारणत्व पत्रिका में किया जा रहा है इससे निष्पक्ष लेखन होगा चारण समाज मे नारी शक्ति का अपना अलग ही महत्व है उसको यह उजागर करती पत्रिका चारणत्व अपने उद्देश्य में सफल रहेगी, ऐसा हमारा विश्वास है इस पुरुष प्रधान देश में चारण समाज ही एक ऐसा समाज है जिसमें नारी जाति को बराबर का ही नहीं उससे भी ऊपर का दर्जा दिया गया है। इसी सम्मान को आगे बढ़ाती यह पत्रिका आने वाली पीढ़ियों को यह अवगत कराती रहेगी इसी आशा के साथ इस के सफल प्रकाशन एवं संपादन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं ।

–सागर कंवर सौदा

चारण समाज के अतीत को सदैव मार्गदर्शक समाज के रूप में इतिहास ने अपने पन्नों पर लिखा है ।कई कवियों के इतिहासकारों के लिए चारण समाज के समन्वित गुणों का समावेश बड़े विषय के रूप में उभरता नजर आ रहा है चारण की 2 लाइनों में इतिहास है। रामायण काल से महाभारत काल में भी अहम भूमिका रही है इस गाथा को आज दुनिया गा रही है लेकिन हमारे संपूर्ण अस्तित्व के बारे में आज की युवा पीढ़ी शायद अनभिज्ञ है। यह बहुत हर्ष का विषय है कि अनुभवी एवं आदर्श युवा महेंद्र सिंह जी चारण द्वारा चारणत्व मैगजीन प्रारंभ किया गया। चारणत्व शब्द अपने आप में बहुत गुणों को समाहित किए हुए हैं मेगज़ीन संपादक कई वर्षों से समाज सेवा में अपना योगदान देते आ रहे हैं यह पत्रिका हमारे गौरवशाली इतिहास एवं चारण साहित्य संस्कृति को समाज के अनुभवी ऐतिहासिक जानकारी रखने वाले बंधुओं का अनुभव साझा करने तथा आने वाली पीढ़ी को लाभान्वित करने का बहुत ही अच्छा माध्यम है। समाज के अंतिम व्यक्ति तक अतीत की जानकारी प्राप्त होकर समाज में नया आयाम स्थापित होगा इससे समाज में आपसी संवाद में समन्वय स्थापित होकर समाज एकजुट व संगठित होगा । समाज के सरकारी सेवा में कार्यरत सेवानिवृत्त अनुभवी समाज बंधुओं का विद्यार्थियों को मार्गदर्शन तथा व्यवसाय उद्योगपतियों से बेरोजगार युवाओं को अपनी योग्यता अनुसार तथा अपेक्षाओं के अनुकूल कार्य सेवा करने का मार्गदर्शन तथा प्रेरणा मिलेगी जिससे समाज में रोजगार के लिए भी सुकृत प्रयास होगा ।

–शम्भुदान चारण
पाली

चारणत्व मैगजीन समाज में संवाद स्थापित करने के लिए उत्कृष्ट कार्य करेगी। सभी सिरदारों से निवेदन हैं कि अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनकर अपनी प्रति सुरक्षित करें।

चारणीय संस्कारों वाला साहित्य घर में आने से हम अपनी गौरवशाली परम्परा से परिचित होंगे, उज्वल भविष्य की राह प्रशस्त होगी साथ ही अपनी नई पीढ़ी को स्वजाति गौरव का ज्ञान प्राप्त होगा। वर्तमान डिजिटल युग के सांस्कृतिक प्रदूषण से अपने परिवार को बचाना चाहते हैं तो श्रेष्ठ साहित्य को घर में जगह देनी ही होगी।

धर्मेन्द्र सिंह

व्यक्ति जब सामाजिक सेवा को ही अपना लक्ष्य मानकर,समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के पथ पर कदम बढ़ाता है तो उसकी निष्ठाओं का आंकलन आप और हम सभी करते हैं,कि उक्त व्यक्ति की सामाजिक निष्ठा का स्तर कैसा है..!! फिर उसके अनुभव,ज्ञान और बौद्धिक क्षमता की स्तरता को नापा जाता है।इन सभी बातों की सम्पूर्णता यदि किसी व्यक्ति में परिलक्षित हो तो समझना चाहिये कि वो व्यक्ति समाज को नई दशा और दिशा देने का माद्दा रखता है।

ऐसा ही कुछ खास नज़र आता है चारणत्व मैगजीन के संस्थापक, संपादक श्री महेंद्र सिंह भादा, निवासी दुधालिया(उदयपुर) के चरित्र,कृतित्व और व्यक्तित्व में।आपके द्वारा सदैव सामाजिक कार्यों की अग्रिम पंक्ति को सुशोभित किया जाता रहा है जो चाहे पत्रकारिता हो,सामाजिक आयोजन हो या समाज की विभूतियों/स्वतंत्रता सेनानियों को उचित दर्जा दिलाने के लिए किये जाने कार्य हो,महेंद्र सिंह जी ने अपनी कलम से,वाणी से और अपने दैहिक सहयोग के बलबूते पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करवाते रहे हैं जिसकी जितनी प्रशंशा की जाए,कम ही होगी।

आप द्वारा प्रारम्भ की गई पत्रिका "चारणत्व मैगजीन" आपके चरित्र और कृतित्व को प्रतिबिंबित करने वाला दस्तावेज ही नहीं वरन समाज के व्यापक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला आईना है,जिसमें हमें साहित्यिक, सामाजिक गतिविधियों के साथ वैयक्तिक सामाजिक विकास की तस्वीर दिखलाई देती है।

चारणत्व मैगजीन का नामकरण जिस उद्देश्य से किया है वो ही गुण पत्रिका को पढ़ने पर दिखलाई पड़ते हैं।चारणत्व मैगजीन समाज का आईना है जिसमें हमें एक ही स्थान पर समाज के सामाजिक,आर्थिक, साहित्यिक,वैयक्तिक प्रगति की तस्वीर नजर आ जाती है।आपके द्वारा समाज के श्रेष्ठ विद्वजनों के आलेख,उनके विचार,उनके साहित्य सृजन को पत्रिका में प्रमुखता से स्थान देकर आम पाठक की सुविधार्थ रखा जाता है जिससे समाज की युवा पीढ़ी को साहित्य के प्रति आकर्षित करने का प्रमुख स्रोत माना जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।समाज में हुवे स्वतंत्रता सेनानियों से देश की समग्र जनता को आगाह किये जाने की दिशा में पत्रिका संपादक द्वारा निरन्तर किये जाने वाले प्रयासों और उनके सम्मान में किए जाने वाले संभावित उठाये जाने वाले कदमों को भी आप और पत्रिका दोनों बेहतर ढंग से सुझाते आये हैं।

पत्रिका का आवरण और सज्जा बेहद खूबसूरत है और इसमें प्रकाशित की जाने वाली सामग्री निःसंदेह समाज के लिए बेहद उपयोगी है।

मैं चारणत्व मैगजीन की अभूतपूर्व सफलता की कामना करता हूँ एवम समाज के विकास में उपयोगी साबित होने वाले दस्तावेज़ के लिए सम्पादक महोदय को कोटि कोटि साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

– जगदीश बिदू
सिंहथल

यह गर्व का विषय है कि चारणत्व पत्रिका का प्रकाशन हमारे चारण समाज के प्रतिभावान एवं समाज सेवक श्री महेंद्र सिंह जी चारण के संपादकत्व में समाज को एक रचनात्मक दिशा प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। जब जब किसी जाति समुदाय में सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का वास होता है और समाज एक भटकी हुई मानवता के पथ पर चलने लगता है तब तक चारणत्व जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन समाज के सदस्यों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का बोध करवाने के लिए जरूरी हो जाता है। आज हमारेा समाज मानसिक संकीर्णताओं के दौर से गुजर रहा है और हमारा युवा वर्ग भटकाव और है इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी समाज की निरंतर प्रगति उस समाज के युवा वर्ग की सोच पर निर्भर करती है यदि हम अपनी भावी पीढ़ियों को सफलता की ओर अग्रसर देखना चाहते हैं तो यह केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संभव हो सकता है। क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य को जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके विपरीत सही और चिंतन का अभाव एक व्यक्ति को पूर्ण बनाने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। अतः जरूरी है, कि हमें अपने संसाधनों का निवेश मानवीय पूंजी में करना चाहिए। हमारी शिक्षा और कार्य निर्धारित करते हैं कि हम किस तरह भविष्य जाते हैं।।हमारा कर्तव्य बनता है कि हम आज की स्थिति का अध्ययन करें आइए हम सब मिलकर निस्वार्थ भाव से कैसे स्वस्थ और शिक्षित समाज का निर्माण करें जिसमें व्यक्तियों के विचारों और कार्य में समन्वय हो जिनका व्यापक दृष्टिकोण हो ना हो और पूरी व्यवस्था आपसी सौहार्द की हो और मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता हो। **डॉ. आर. डी. मानव(करणी कुंज, गूड़गांव, 9871591618)**

"चारणत्व" का प्रथम अंक बहुत शानदार था। चारण परम्पराओ को सिखाने वाल तथा समाज की समसामयिक गतिविधियों की पूर्ण जानकारी देने वाला रहा और समाज का नाम रोशन करने वाले व्यक्ति अपने आप मे प्रेरणास्रोत है। चारणी साहित्य और चारण कवियों के जीवन परिचय ओर उनकी रचनाओं की क्रमशः प्रकाशन की आपसे अपेक्षा हैं। पूरे देश मे बसे चारणों के विविध सामाजिक कार्यक्रमों को भी प्रकाशित करने की विनती हैं। समाज को मार्गदर्शन देने के लिए ओर चारणत्व सीखाने के लिए महेंद्र जी का आभार। माँ करणी आपको सामर्थ्य ओर आशीर्वाद प्रदान करें। "चारणत्व" के आगामी अंको के लिए शुभकामनाएं

प्रोफेसर शेषकरण चारण, 'झणकली'

साथी छोड़ स्मेक

घरा नेहड़ नशो धणी , सब घर मीले स्मेक ।
ऊजल ओपी आवतो, गायब हुआ गंजेक ।।1।।

सांचोरी सूधर गई , गंजा गायब हुआह ।
ऊजल रे हथ चढ़ गया, (पछे) वले न मार्ग वूआह ।।2।।

घर घर मे घूमे घणी , रमे रही हर रैंक ।
माता अरजी मान ले , छोड़ण पूत समैक ।।3।।

जीवण मे जीवत रहा , पीणा नाही पैक ।
स्मेक नशे ने साथिड़ा , फट दे आगो फेंक ।।4।।

पग टुटे हथ्थ हिलमिले , अरगत दूखे अंग ।
स्मेक नशे ने साथिया , छोड़न रो कर संग ।।5।।

मान घटे अरु धन हटे , कटे जीव रो कोड ।
अटपट जीभा आपणी , स्मेक साथ ने छोड़ ।।6।।

पीणा न गंजा पावणा, इणरी सोंगन आज ।
छोड़ो स्मेक साथीड़ा , ओपी करे इलाज ।।7।।

उण री कर आराधना , जिण दीधो आ जीव ।
साथीह छोड़ स्मेक ने , प्यारी रा हे पीव ।।8।।

अक्ल नशा री ओट ले , जावै जोजन च्यार ।
साथीह छोड़ स्मेक ने , पदमण सौ कर प्यार ।।9।।

कोड करोड़ो जे करे , जालव थारो जीव ।
साथीह छोड़ स्मेक ने , परणी वाला पीव ।।10।।

सायधण रोय सोवटे, टके टके री टेव ।
साथीह छोड़ स्मेक ने , संकल्प करले सेव ।।11।।

आ हाणी है हिव तणी , समझायत समझाय ।
साथी थारी छैलड़ी, लेगी स्मेकी लाय ।।12।।

छोड़ छोड़ दे साथिया ,मोड़ नशा सो मुःख ।
तोड़ सबन्ध तत्काल रा , दौड़ स्मेक है दुःख ।।13।।

पिता मात परिवार को , अर्ज ऐक है आज ।
दलदल नशा के दोष सु, सदा हि मुक्त समाज ।।14।।

घर आंगन की खुशियां ,रंग भर राजी हौय ।
साथी नशा हि छोड़िये , कमी न रहसी कोय ।।15।।

बेटा घर सु बहार है , आवे नहि अधरात ।
पहला उससे पूछिये , भया संग कौन भ्रात ??16।।

बिड़ी अमल डोडा बुरा , साथे घणीह स्मेक
(ऐ)केंसर ने आवण कहे , पुरा जहर रा पैक ।।17।।

केंसर री है कोठिया , किडनी रोग कमाय ।
आभूषण सगळा बिके , दुःख आवे सब दाय ।।18।।

चावे भलो संसार मे , साथीह छोड़ स्मेक ।
पदमण राजी परघली, नशा मुक्त वे नेक ।।19।।

— हिंगलाज दान चारण

गीत- जोरावरपुरा माताजी रो गजादान आसावत नाथूसर रो कयो

आया सेवग आस कर, हे दाया दरियाय ।
महमाया करनी मया, सुरराया कर स्याय।।
और न दीसै अवनि पे, जीसै करूं जुंहार।
सुर तेतीसै में सिरै, देवी तूं दातार।।
जंगळ में मंगळ रचै, दंगळ दुष्ट दबाय।
अमंगळ झट अळगा करै, मेहाई महमाय।।
जोरावरपुर है जबर, धिनियाणी तव धाम।
सोहै मढ़ हद सोहणो, ओरण बिच अभिराम।।
अड़ीखंब आगल खड़ा, भुरजाळा बेहुं भ्रात।
करुणा सुण किरपा करै, नित्त भैरवानाथ।।
जागण व्है जगदम्ब रो, उमड़ै भीड़ अपार।
बँटै प्रसादी प्रेम री, देवी रै दरबार।।

गीत छंद चिरजा घणी, गाय करै गुणगान।
राय सुणंतां रीझवै, द्यै विद्या वरदान।।

गीत साणौर

करै खास अरदास सब दास सुण करनला
आस कर आपरै द्वार आया।
मन्न में जास विश्वास अत मावड़ी
देविका रखाजे परम दाया।।
बळू तू कळू में रहीजे बीसहथ
चळूनद सोखणी मात चंडी।
भक्त भयभंजणी कृपालू भवानी
खीज कर दढाळी देत खंडी।।
रीझ कर रीझ कर राय हिंगोळ री

छोरुआं रखाणी छत्रछाया।
बगस रुजगार व्यापार सुख बगसणी
जोरावरपुराळी जोगमाया।।
मूरती तोय महमाय मनभावणी
दरस में हरस री लहर दौड़े।
परस कर चरण जो पुकारै प्रेम सूं
चारणी सहायक रहै चोड़े।।
भ्रात दुहुं द्वार पर खड़ा भड़ बांकड़ा
सांकड़ा सेवगां रखण सौरा।
मात रा भ्रात नित अगाड़ी मदद में
निमख नीं काढणा पड़ै न्होरा।।
बणी री आईना रखी तैं बणाई
इयां ही रखाजे अंब आगै।
रूप रळयिामणा सुहाणा रूंखड़ा
जिका नित गाम रै हेत जागै।।
सीख तव आईना समप्पे सुहाणी
घाव पण रूंख रै न को घालै।
छांग कर लूंग ले करै नीं छानेड़ो
हुकम तो मावड़ी सकड़ हालै।।
चोर जे उठावै गाम सूं चीज को
बणी में भटकतां टेम बीतै।
अंब तूं उघाड़ै बोध री आंखिया
रिदै पछताय, कर जाय रीतै।।
दूसरै नौरतै जागरण दीरीजै
अंब आसोज रो मास आयां।
हेत सूं प्रसादी अरोगै हजारूं
जिकां खुद जिमाड़ै जोगमायां।।
पढै छँद गीतड़ा पात मिल प्रेम सूं
जात दे जिकां रा कष्ट जावै।
गाय चिरजाय जो रिझावै मात नैं
अखां सुख संपदा धाम आवै।।
उरां ले भाव जो करै है आयोजन
पुरां वां मावड़ी प्रगट राजै।
मन्न तन निरोगा रखै मातेसरी
बरकतां तणां नित ढोल बाजै।
आस अर पास रै गामां सूं आविया
भगतजन लाविया भाव भीना।
गाविया रातभर तोर जसगीतड़ा
दया कर दढाळी दरस दीना।।
अरज आँ किसानां तणी सुण अंबिका
खूब कर सवाई साख खेती।
टीडियां कातरो रूंखड़ी टाळजे
आफतां जाळजे मात अेती।।
समै पर मेह बरसायजे सुराणी
साख सरसायजे भोम सारी।
मतीरा काकड़ी टींडसी मोकळा
मही उपजायजे मात म्हारी।।
मवेसी कुसळ सब रखाजे मेहाई
घास अन हरै रा न हो घाटा।
दूध घृत दही तू दिराजे दपटवां
लखां लख अन्न रा देय लाटा।।
भणै वां टाबरां हियै दे भरोसो
मगज में समझ दे महमाया।
रुळै ना जवानी कोय अधराह में
कृपाळू रखाजे कुसळ काया।।
माण रख मायतां काण कुळ गाम री
आन अर बान नहं आंच आवै।
प्राण जे रखै तो प्रण पण निभाजे
गरज कर भगतजन गीत गावै।।
बधाजे वंश री बेल नित बडाळी
मढाळी परस्पर मेळ कीजे।
दढाळी सदा ही दया कर दासड़ां
सुराणी चरण री सरण दीजे।
नगर नाथाण रो पात गजराज नित
चित्त सूं तिहारा दरस चावै।
कृपा–कर सीस पे रखीजे करनला
जिकण सूं दोख सब दूर जावै।

छप्पय

दोष हटै सब दूर, कटै सब कष्ट कलेसा।
राखै सौरा राय, देय वरदान विसेसा।
अन धन देय अपार, सदा सम्पत सरसावै।
उर में व्है जो आस, प्रगट महामाय पुरावै।
सेवगां सुजस शिखरां चढ़ै, क्रोड़ भांत विकसै कला।
गजराज सरब गरजां सरै, करै कृपा जद करनला।

चारण छात्रावास जोधपुर के नवीन भोजनशाला परिसर का शुभारम्भ आज मारवाड़ चारण सभा ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष महिपाल सिह उज्जवल, जोधपुर ज़िलाध्यक्ष बुद्धदान चारण ने फ़ीता काटकर मॉ भगवती को लापसी एंव प्रसादी का भोग लगा कर किया । इस अवसर पर चारण समाज के सैकड़ों गणमान्य लोगों ने भाग लिया । भवन निर्माण ठेकेदार को साफ़ा पहना कर सम्मानित भी किया एंव मनो कृपा फ़ाउण्डेशन द्वारा एक वाटर कूलर भोजनशाला को समर्पित किया गया ।

जितेन्द्र सिंह देवल
प्रवक्ता, मारवाड़ चारण सभा ट्रस्ट,जोधपुर

॥ चारणत्व ॥ समाचार

पुनर्जागरण का शंखनाद

कुसुम चारण स्टार डायमंड अवार्ड से सम्मानित जोधपुर बीकानेर में आयोजित यूथ वर्ल्ड सोशल मीडिया मैत्रिक सम्मेलन में राष्ट्रीय स्टोर डायमंड अचीवर्स अवॉर्ड 2018 आयोजित हुआ जिसमें जोधपुर की श्रीमती कुसुम जयपाल कारण को स्टार डायमंड अवार्ड से सम्मानित किया गया श्रीमती कुसुम चारण महिला जागरूकता शिक्षा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करती रही है।

'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुरूक्षेत्र द्वारा आयोजित 16 वें दीक्षांत समारोह' में **'छगन दान आशिया को इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी' की उपाधि** प्रदान की गई । श्री शक्तिदान जी आसिया के सुपुत्र छगन दान आसिया इंद्रानगर ,बाडमेर के निवासी है

आई श्री ककूकेशर माँ के आशीर्वाद से चारण शक्ति सगठन निमाड द्वारा रक्तदान शिविर रखा जिसमे गांव "धर्म घट्टी " जिला खरगोन के द्वारा आयोजन किया गया जिसमे चारण शक्ति सगठन कि मिटिंग रखी गई जिसमे निमाड क्षेत्र के सभी भाई पधारे चारण शक्ति सगठन के सगठन प्रमुख शेर सिह गढ़वाड़ा सगठन के कोषाध्यक्ष भागीरथ सिह गढवाडा व मोहन भानसोल गढवाडा विशिष्ट अतिथि थे व अगले दिन प्रातः 10 बजे से रक्तदान शिविर रखा गया जिसमे चारण शक्ति सगठन के कार्यकर्त्ता रक्तदान किया निमाड क्षेत्र के संगठन सभी गांव के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष उपस्थित थे चारण शक्ति संगठन के सभी कार्यकर्ता भाग लिया ।

एकता बहुत बड़ी उपलब्धि है जहा एकता है वहा कोई भी विद्रोही शक्ति सफल नही हो सकती है। जहां सगठन हे एकता हे वहाँ हमेशा प्रेम–वात्सल्य बरसता है ।

राजू मावल

पृष्ठ 33 का शेष

मेवाड़ में शिक्षा.....

परंतु मदरसा पाठशाला बंद हो जाने से चारणो के दूसरे लड़के अनपढ़ रह जाएंगे इसमें हुजूर की भी बदनामी होगी कि महाराणा सज्जन सिंह जी ने कृपा करके मदरसा जारी किया था वह महाराणा फतेह सिंह जी के जमाने में बंद होकर चारणो के लड़के अनपढ़ रह गए इसलिए ज्यादा नहीं तो सिर्फ शिक्षकों की तनख्वाह के लायक खर्च राज्य से प्रदान करे बाकी खुराक आदि का खर्च लड़कों के माता–पिता देंगे। मदरसा जारी हो जाने से हुजूर के हाथसे जाति का बड़ा उपकार होगा। महाराणा को यह बात पसंद आई और संवत 1943 पौष शुक्ल बीज अपने जन्मदिन के उत्सव पर महाराणा फतेह सिंह जी पाठशाला के मकान में पधारे और उसका उद्घाटन किया एवं मास्टरों की तनख्वाह के लिए दो रुपए सदा राज्य से मिलते रहने का आदेश दिया। उसी दिन से पाठशाला भवन में मैं पंडित गोपीनाथ शास्त्री आ गए। इसके बाद बीच–बीच में राजा जी अपने क्लर्क पंडित गौरीशंकर औझा भी बालकों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए नियत किया था....किंतु इस व्यवस्था में भी चारणों का अपने बालकों को पढ़ाने के लिए भेजना बर्दाश्त करना उस समय असंभव था। काफी समय के पश्चात उत्साही जाती हितेषीयों की सच्ची लगन के सतत प्रयत्न के परिणाम स्वरुप उस पाठशाला का रूपांतर श्री भूपाल चारण छात्रालय स्थापित हो गया । महाराणा भूपाल सिंह जी ने उच्च पाठशाला के मकान और बाड़ी को तो राजकीय मोटर गैराज बनाने के लिए जब्त कर लिया और उसके बदले में मकान की कीमत के 30000 और उतनी ही जमीन सूरजपोल बाहर हवाले में प्रदान कर दी जिसमें छात्रालय बन जाने पर संवत 1994 चैत्र अष्टमी गुरुवार को स्वामी पधार कर उसका उद्घाटन किया और ढाई सौ रुपए वार्षिक राजकीय सहायता मिलते रहने की आज्ञा दी तब से यह श्री भूपाल चारण छात्रालय चल रहा है।

घनश्याम भाई मोड़
गुजरात काँग्रेस जनरल सेक्रेटरी नियुक्त

बलवंत भाई बाठी
गुजरात कांग्रेस सेक्रेटरी नियुक्त

दिनेश सिंह लखावत
उत्तर चेन्नई जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त

चारण समाज की प्रथम महिला DYSP कु. ऋतु बेन को राजकोट ''अवधूत'' अवार्ड प्रदान किया गया ।

महात्मा ईसरदास की पुस्तक का विमोचन करते हुए सग्त लक्ष्मी बाईसा, पूर्व सांसद प्रभा ठाकुर प्रदेशमंत्री सुप्यार चारण

सुश्री गुंजिता चारण
पुत्री धर्मवीर सिंह
ने मणिपाल यूनिवर्सिटी से
बी.ए. अर्थशास्त्र में 100 प्रतिशत
अंकों के साथ गोल्ड
मेडल प्राप्त किया ।

चेष्टा सिंह लखावत पुत्री बृजराज सिंह लखावत (गोदियाना अजमेर)
अजमेर जिला ओपन प्रतियोगिता में 400 मीटर दौड़ में
प्रथम स्थान व राज्य स्तर पर चयनित

हर्ष सांदू का दिल्ली यूनिवर्सिटी, अंग्रेजी विषय में 29वीं रैंक में व्याख्याता पद पर चयन व सीमा सांदू का महाविद्यालय में स्नातक में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया ।

श्रीमती **नीतू किनियाँ** का RPSC द्वारा व्याख्याता (केमेस्ट्री) के पद पर चयन कर, GASSS, रूल्याना (लक्ष्मणगढ) सीकर में नियुक्त हुई ।

राम प्रकाश चारण
पुत्र श्री शंभू सिंह जी चारण
जोधपुर राजस्थान विद्युत विभाग
जोधपुर XEN (LEGAL) में चयन

श्री तेज बहादुर सिंह बाड़ी
रायपुर ब्लॉक अध्यक्ष

शिक्षक संघ

श्री हनुवंत सिंह बारहठ
सोजत सिटी ब्लॉक अध्यक्ष

श्री जीवनदान सिंहढायच
महामंत्री भाजयुमो, कालंद्री, सिरोही

मनोनयन

श्री जेठू सिंह रोहड़िया
शिवसेना नगर प्रमुख, बालोतरा

करणवीर सिंह आढ़ा

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

माँ करणी की असीम अनुकंपा से पी एच डी के लिए टेक्निीकल यूनिवर्सिटी ब्राउन्चबेग जर्मनी में चयन होकर दिसम्बर में प्रस्थान करने एवं 32975 युरो (30 लाख रुपये) की स्कोलरशिप मिलने पर हार्दिक बधाई

ठा. प्रताप सिंह जी ठा. बद्री दान जी ठा. खीम सिंह जी (दादाजी) ठा. शैतान सिंह ठा. अर्जुन सिंह (बड़े पिताजी) श्रीमती सुमन कुंवर-श्रीमान गोविंद सिंह जी (माताजी-पिताजी) कविता, आदिति (बहिन) जबर सिंह हिम्मत सिंह हेतु सिंह प्रेम सिंह गणपत सिंह, वासुदेव सिंह माधु सिंह एवं समस्त आढ़ा परिवार ठि. कागडी जिला पाली ठा. शिव सिंह जी ठि. मैंघटिया, स्वर्गीय ठा. श्री भंवर दान जी ठि. सींथल ठा. जय सिंह जी ठिकाना जीवन्द, ठा. हनुमान सिंह जी ठि. सींथल, श्री भरत सिंह जी खिनावड़ी, डॉक्टर माधु सिंह जी ठि. खारी, श्री कैलाश दान जी ठि. आंगदोष श्री मानसिंह जी गढ़सूरिया, श्री गोपाल दान जी ठि. खारी, श्री सुखदेव सिंह जी ठि.रेंदडी, श्री चावंडदान जी ठि. कांवलिया श्री हरि सिंह जी बासनी(फूफोसा) ननिहाल पक्ष स्वर्गीय श्री मदन सिंह जी ठा. श्री मूल सिंह जी ठा. दलपत सिंह जी स्वर्गीय ठा. प्रताप सिंह जी (नानोसा) श्री नटवर सिंह जी श्री गणपत सिंह जी जबर सिंह जी श्री बलवंत सिंह (मामोसा) एवं समस्त गेलवा परिवार ठि. मेरोप डूंगरपुर

ANAND DEWAL
Mob.: 99830 32901

Ambika Glass House

6/5, Magadi Road, Near Metro Station
Opp.Solar Motor, Bangalore-560 023
Ph:86600 35604

Email : ambikaglasshouse@rediffmail.com

ARCHIDPLY
Since 1976
HEALTHY BREATHING
LAMINATES • VENEERS • PLYWOOD • PRE-LAM
www.archidply.com

विश्वास
Township
आपके सपनों का घर
1 BHK / EWS ONLY@
₹ 7.68 Lac
Booking amount 40.000/-
2 BHK / LIG ONLY@
₹ 12.35 Lac
Booking amount 50.000/-
90% तक ऋण
ब्याज दर 6.5%* सब्सिड़ी
मुख्यमंत्री आवास योजना–2015
EWS LIG
आवेदन फार्म के साथ देय आवेदन राशि 40,000/- 60,000/-
आवेदन के पश्चात् आवेदक को सूचना के दिनांक 36,800/-
• भूकम्प रोधी संरचना
• पर्याप्त पार्किंग स्पेस
• बच्चों के खेलने के लिए पार्क
• कम्युनिटी हॉल
• वर्षा जल संचयन प्रणाली
• सिढ़ीयों में पॉलिश युक्त फ्लैट एवं कॉमन एरियाज
• मापदंड़ो के अनुसार पार्किंग
• ग्राउंड़ व ओवरहैड पानी की टंकी
• पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए
• सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट
• मानदंडो के अनुसार ग्रीन एरिया
• वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशिष्ट निर्धारित
MATRA
Group
Property Expert
Advisor
प्रोपर्टी क्रय विक्रय हेतु सपर्क करें
अरविंद चारण
(वराल)
9829669922
• बालकनी तथा रसोई में एंटी स्किड
• बेडरूम तथा हॉल में टाइल्स
• टॉयलेट्स में अच्छी गुणवत्ता की टाइल्स
• शौचालयों में आडिशा पान/येरोपीयन डब्ल्यू सी
• भीतरी व बाहरी दिवारो पर उच्च गुणवत्ता वाला पेन्ट
• बाथरूम व रसोई में बेहतरीन फिटिंग
• एल्येमिनिय सेक्सन खिडकियाँ
• लेमीनेटेड दरवाजे
• रसोई में सिंक व काउंटर
विश्वास बिल्ड होम्स प्रा. लि.
जिला उद्योग केन्द्र के पास, रूपरजत स्कूल के सामने, बालाजी रेजीडेन्सी के पास, सिरोही-307001

100% तुरन्त राहत भरोसेमंद
Jairaj
Jairaj Ayurveda
100% तुरन्त आराम आयुर्वेदिक
Kr. Jagdish Adha
Managing Director
+91 94140 62645, 70148 77185
बालों को घने, सुन्दर लम्बे एवं चमकीले बनाने के लिये
जय केशराज हर्बोमिक्स शैम्पू
जय केशराज शिकाकाई शैम्पू
Jai Harbomix
ग्लो राज लेमन अलोवेरा
स्वस्थ सुन्दर शरीर के लिये उपयोग करें
जय हर्बोमिक्स साबुन
ग्लो राज लेमन अलोवेरा साबुन
जय मर्थौराज ऑयन्टमेन्ट
चोट आमवात, संधिवात, ग्रध्रसी, मोच, जकड़न, कमर, घुटनों और मांसपेशियों, पैर, गर्दन, जोड़ों के दर्द, बादी आना, सूजन आदि के लिए उत्तम
जय केशराज ग्रीन ऑलिव एलोवेरा तेल
जय दंत राज मंजन
मजबूत सुरक्षित स्वस्थ दाँतों को लम्बी उम्र देने वाली औषधी मंजन है, व मसूड़े की बीमारी, दाँतों का मैल आदि यह दाँतों को मजबूत व चमकदार बनाता है।
जय मर्थौराज पैन कीलर ऑयल
जोड़ों, पीठ, हाथ पैरों के दर्द, गाठिया वायु, मांसपेशियों में जकड़न, गर्दन व कंधों में दर्द इत्यादि तुरंत राहत।
जय महाभृंगराज कूल ऑयल
ग्लो राज अलोवेरा फेस पैक
झुर्रियाँ, त्वचा मुलायम, त्वचा पर नई कोशिका को उत्पादित करता है। कील-मुहाँसों को ठीक करता है। सूर्य कि हानिकारक किरणों से बचाता है।
जय स्कीम राज ऑयन्टमेन्ट
यह ऑयन्टमेन्ट एक एन्टीसेप्टिक है जो चर्म रोगों, दाद-खाज, खुजली, घाव, सूजन, मक्खियों से बचाव तथा वर्षा ऋतु में पांव की उंगली के घाव को भरने में उपयोगी है।
बोडी मसाज तेल
ग्लो राज गोल्ड फेस पैक
Glow Raj Gold
त्वचा चमक उठती है। बुढ़ापे के लक्षणों से छुटकारा दिलाती है। झुर्रियों को कम करती है, त्वचा कोमल और मुलायम बनी रहती है।
दर्द राज बाम
सिरदर्द, बदन दर्द और सर्दी-जुकाम से आराम दिलाता है।(एक बाम तीन काम)
जय केशराज नेचुरल (ब्लैक) आयुर्वेदिक मेहन्दी
बालों को काला करती हैं एवं डैंड्रफ और बालों के गिरने की समस्या को भी दूर करती है। संक्रमण से सुरक्षा देने का काम करती है। तथा कोई साईड इफेक्ट नहीं।
च्यवनप्राश राज
दर्द राज जात्यादी
गैस हर चूर्ण
राज चाय मसाला
RAJ TEA TASTE IMPROVER
ग्लो राज क्रिम
चेहरे के पिम्पल्स एवं आँख के निचे की काली झाई को दूर कर त्वचा को मुलायम, निरोगी एवं क्रांतियुक्त बनाता है।
पाचक राज मैथी
पुरानी से पुरानी कब्ज, गैस, एसिडिटी, मोटापा, डायबिटीज, वायु विकार, बदहजमी से तुरन्त छुटकारा।
जयराज बेबी सोप
Head Office:
006, Tower 4, Nirala Estate Phase I, GH-4, Tech Zone-4 Noida, Extension-201306
jairajayurvedanoida@gmail.com I www.jairajayurveda.com
Customer Care: 98290 62645 / 9414062645
GANDHI NAGAR | MUMBAI | BANGALURU | NEW DELHI | JAIPUR | SIROHI ROAD | YAMUNA NAGAR
जिलों व तालुका डिस्ट्रीब्यूटर के लिये संपर्क करें।
Reg. Office: Opp. Paramand Garden, Shobhagpura 100ft Road, Meera Nagar, Udaipur-313001
TOLL FREE : 18005324004